CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

D/113

पुरातत्व परिचय

लेखक - परमेश्वरीलाल गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५५०
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भूगर्भ शास्त्र

पुरातत्व-परिचय

लेखक
परमेश्वरीलाल गुप्त

प्रकाशक
किताब महल · इलाहाबाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
किताब महल
इलाहाबाद

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। उसके विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। कहना अपने सम्बन्ध में है। इस पुस्तक के लिखने का मैं कदापि अधिकारी नहीं हूँ। पर, इसकी धृष्टता मैंने जान और समझ-बूझ कर की है।

आज पुरातत्व-सम्बन्धी जितनी भी पुस्तकें हैं वे सब अंग्रेजी में हैं। भारतीय पुरातत्व के जितने विद्वान् हैं वे सब अंग्रेजी में लिखते हैं। इस कारण हमारे हिन्दी-साहित्य का कोष इस विषय से खाली है। उंगली पर गिनने के लिए भी एक पुस्तक नहीं है। दूसरी ओर जनसाधारण इतने अज्ञान हैं कि पुरातत्व उनकी दृष्टि में उपहास का विषय है, जबकि प्राचीन संस्कृति को प्रकाश में लाकर चकाचौंध करने का श्रेय उसी को है। अतः जनसाधारण और विद्वानों को उदासीन देख कर मन ने विद्रोह किया और उसी विद्रोह का परिणाम यह पुस्तक है।

इस प्रयत्न में मैं कितना सफल हुआ हूं इसका लेखा-जोखा मुझे करने की आवश्यकता नहीं। यह वही करेंगे जिनके हाथों में यह जायेगी। हाँ, इतना बता देना अनुचित न होगा कि पांडुलिपि श्री जयचन्द्र विद्यालंकार, स्वर्गीय रावबहादुर काशीनाथ नारायण दीक्षित (भारतीय पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर), राहुल सांकृत्यायन और डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल की आँखों के नीचे से गुजर चुकी है। उन्हीं के प्रोत्साहन से यह आपके सामने है।

पुस्तक १९४१ में अप्रैल से अगस्त के बीच फतहगढ़ सेण्ट्रल जेल के भीतर लिखी गयी थी। मेरे आदरणीय अध्यापक रेवरेण्ड आस्टिन जेम्स ने जेल में पढ़ने के लिए कुछ पुस्तकें भेजी थीं जिनमें एक थी सर लियोनर्ड ऊले लिखित 'डिगिंग आव द पास्ट'। उस पुस्तक के पढ़ने के बाद मेरे मन में उसका अनुवाद करने का विचार उठा और अनुवाद कर भी लिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया। लेकिन उसके बाद ही 'युसिर्वासिटी ग्राव नालेज' सीरीज़ का 'डान ग्राव सिविलाइजेशन' ग्रौर प्रोफेसर गार्डनर का 'एचीवमेंट ग्राव ग्राक्र्यालॉजी' पढ़ने को मिला। उनके पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि उक्त अनुवाद के स्थान पर स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जाय जिसमें इन दोनों पुस्तकों का भी प्रचुर उपयोग किया जाय। अतः मैंने रूप-रेखा तो ऊले वाली पुस्तक की ही रखी पर उसे लिखी नये सिरे से। पर उसमें एक बहुत बड़ी कमी यह थी कि पुस्तक की पृष्ठभूमि भारतीय पुरातत्व न होकर मिस्र, मेसोपोटामिया, सुमेर ग्रादि का पुरातत्व था। लिखते समय इस कमी की ग्रोर मेरा ध्यान न जा सका था। जेल से बाहर ग्राने पर जब पांडुलिपि विद्वानों के हाथ में गयी तो उन्होंने इसकी ग्रोर निर्देश किया, ग्रौर उसी निर्देश के ग्राधार पर पुस्तक भारतीय पुरातत्व की पृष्ठभूमि बना कर फिर से लिखी गयी ग्रौर ग्रब उसी रूप में ग्रापके सामने है। इस पुस्तक के मौलिक होने का दावा मेरा नहीं है। मैं ग्राज भी पुरातत्व का विद्यार्थी हूं, विद्वान् नहीं। मेरा ज्ञान दूसरों से उधार लिया हुग्रा है। मैं उपर्युक्त सज्जनों का कृतज्ञ हूं; उनसे मुझे सदा सत्परामर्श ग्रौर प्रोत्साहन मिलता रहा है। साथ ही मैं सारनाथ संग्रहालय के संग्रहाध्यक्ष भाई ग्रद्रीशचन्द्र बनर्जी का भी ग्राभारी हूं जिन्होंने साहित्य-सामग्री से मेरी भरपूर सहायता की ग्रौर लेखन-काल में बराबर ग्रपनी सलाह से मुझे लाभान्वित करते रहे।

ग्राज पुस्तक ६ बरस के बाद प्रकाशित हो रही है। इस बीच यह कई प्रकाशकों का मुँह देख चुकी है। प्रकाशित करना सबने स्वीकार किया पर कागज के ग्रकाल ने इसे प्रकाशित होने नहीं दिया। ग्रब किताब-महल के संचालक इसे प्रकाशित कर रहे हैं। इसे मैं उनकी कृपा ही मानता हूं क्योंकि ग्रभी भी कागज का ग्रभाव प्रकाशकों के सिर पर ज्यों का त्यों नाच रहा है।

काशी
प्रथम स्वतन्त्रता दिवस

परमेश्वरीलाल गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय

रावबहादुर काशीनाथ नारायण दीक्षित

को

जिन्होंने पिता का-सा स्नेह देकर मेरे पुरातत्व-प्रेम को
प्रोत्साहित किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ
१. प्राक्कथन	१-२८
२. खुदाई	२९-३८
३. नगर और भवन	३९-५६
४. समाधि-सामग्री	५७-६९
५. इतिहास का निर्माण	७०-७८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरातत्व-प्रवेश

प्रथम अध्याय

प्राक्कथन

पुरातत्व किसे कहते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर सहज नहीं है। भिन्न-भिन्न विज्ञान-विशारद उसका अर्थ भिन्न-भिन्न अर्थों में करते हैं। साधारणतया पुरातत्व का तात्पर्य प्राचीन वस्तुओं का विज्ञान समझा जाता है। किन्तु किसी विशेष विज्ञान से अलग इस विज्ञान के स्वरूप का स्पष्टीकरण बहुत कुछ उसके विषय, उद्देश्य और व्यवस्था पर निर्भर करता है। संक्षेप में हम इसको मानव-विज्ञान, भूगर्भ-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, इतिहास और कला के उस भाग का समन्वय कह सकते हैं जिसका सम्बन्ध भूतकाल से है। कम या अधिक रूप से ये सारे विज्ञान इसके अन्तर्गत आजाते हैं। पर इस विज्ञान का सम्बन्ध मानव-संस्कृति और कला के इतिहास से विशेष समझा जाता है।

मनुष्य अपने जन्मकाल से ही जीवन, संस्कृति और कला के विकास की ओर बढ़ता जा रहा है। उसने इनका विकास कब, कैसे और किस रूप में किया इसका प्रकाशन ही इतिहास का विषय है। साधारणतया इतिहास के ज्ञान के साधन ग्रन्थ एवं अन्य लिखित सामग्री समझे जाते हैं। लेखन-कला का विकास अधिक से अधिक ईसा से तीन हजार वर्ष पहले हुआ था, ऐसा समझा जाता है। यद्यपि इस काल के बहुत बाद तक के इतिहास के लिखित साधन अप्राप्य हैं, तथापि यदि थोड़ी देर के लिए लिखित साधनों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा उस कालके इतिहास के ज्ञान की सम्भावना का अनुमान कर लें, तो भी प्रश्न होता है कि लिपि-काल से पूर्व की अवस्था का ज्ञान कैसे हो सकता है? इसी प्रश्न का उत्तर पुरातत्वविद् अपने विज्ञान की सहायता से देता है। वह ऐसी सामग्री उपस्थित करता है जिसके आधार पर इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं और लोगों के जीवन तथा संस्कृति की रूपरेखा अंकित कर सकने में सफल होता है। पुरातत्वविद् हमें भूतकाल का जो ज्ञान देता है वह उसे भूमि में दबे हुए तत्कालीन वस्तुओं के अवशेषों से प्राप्त करता है। अस्तु,

साधारण दृष्टि में पुरातत्व का अर्थ भूमि में दबी प्राचीन वस्तुओं को खोद कर प्रकाश में लाना है। स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि किसी प्राचीन वस्तु के भूमि से खोद कर ऊपर लाने का तात्पर्य क्या है? इसके उत्तर में जब पुरातत्वविद् खुदाई में मिले बर्तन, औजार, गहनों अथवा मनकों को दिखा कर कहता है कि वे पांच या छः हजार वर्ष पुराने हैं तो हम एक बार सुन कर चौंक उठते हैं और उसकी प्राचीनता की सराहना करने लगते हैं। हमारे इस आश्चर्य का कारण उन वस्तुओं की आयु उतनी नहीं होती जितना कि वे वस्तु स्वयं। यदि आयु की बात हो तो डिनोसर[1] के प्रस्तरभूत अंडों की तुलना में उन वस्तुओं की आयु नगण्यही ठहरेगी और इसीलिए जब हम भौगर्भिक-आयु पर दृष्टि डालते हैं, तो मानव-संस्कृति के पांच, छः या दस हजार वर्ष की महत्ता कुछ भी नहीं रह जाती। इसलिए उन वस्तुओं की महत्ता इस बात में समझी जाती है कि वे उन लोगों और उनकी सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं जो हमारी ही तरह रहे होंगे और जिनकी शृंखला आज की हमारी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी हुई है। आज जब हम मोहें-जो-

---

[1] अति प्राचीन युग का छिपकली के आकार का एक विशालकाय जन्तु जो अब अप्राप्य है।

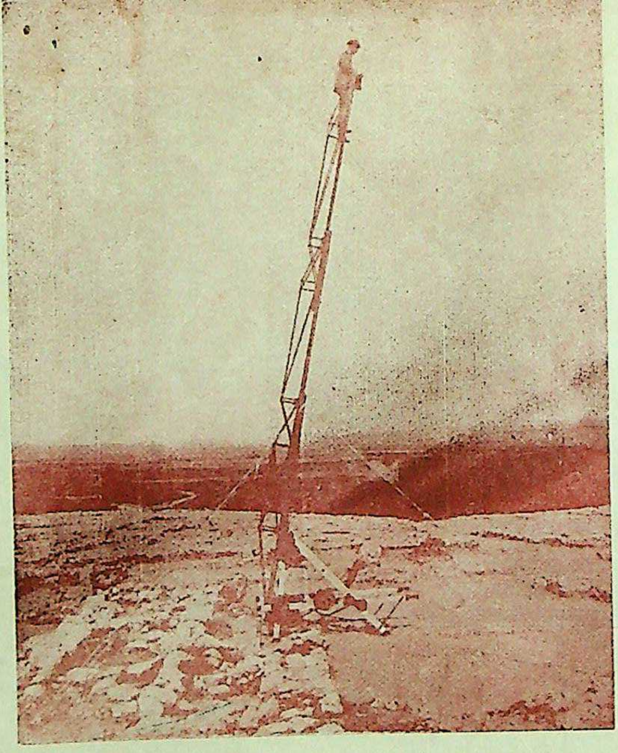

आकाश से चित्र लेने की एक पद्धति। (पृष्ठ २७)
[शिकागो विश्वविद्यालय की प्राच्यशाला से]

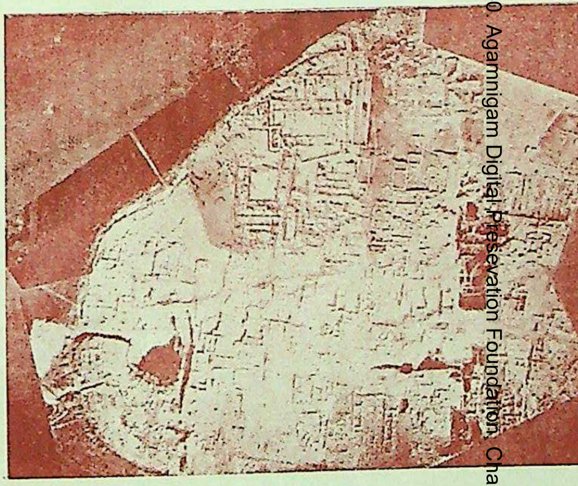

आकाश से लिया गया एक प्राचीन स्थल का चित्र (पृष्ठ २
[शिकागो विश्वविद्यालय की प्राच्यशाला से]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोहें-जो दड़ो की एक सड़क (पृष्ठ १३)
[भारतीय पुरातत्व विभाग से]

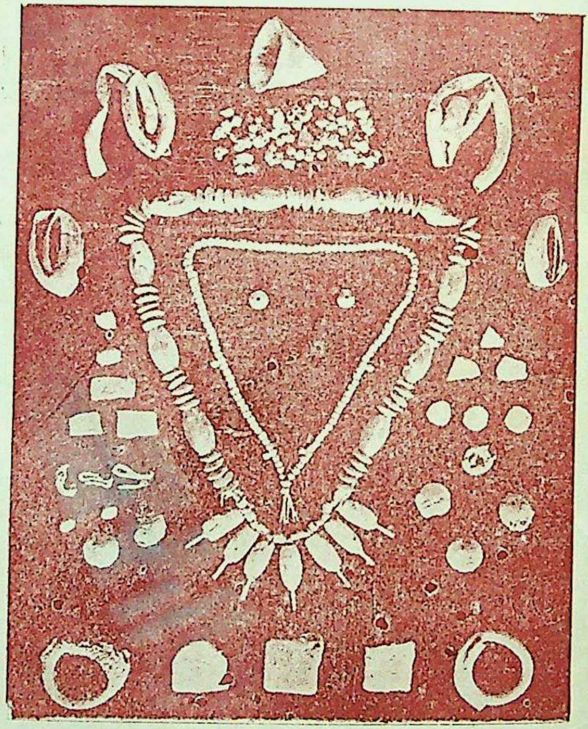

मोहें-जो-दड़ो में प्राप्त मनके और गहने (पृष्ठ १३)
[भारतीय पुरातत्व विभाग से]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दड़ो और हड़प्पा की नालियों को देखते हैं, तो उसमें अपनापन जान पड़ता है; जब हम वहाँ मिले प्रसाधन-सामग्री को निरखते हैं, तो मन में एक अजीब ममता का संचार होने लगता है। जब हम किसी संग्रहालय में सुरक्षित किसी वस्तु की आज की बनी वस्तु के साथ तुलना करते हैं, तो हम उनमें एक अजीब समता देख कर आश्चर्य-चकित रह जाते हैं; और आँखें फाड़ कर इस प्रकार देखने लगते हैं मानो हमारे सामने क्षितिज खुल पड़ा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पुरातत्व का उद्देश्य मानव-सभ्यता की प्रगति का अनुसंधान है।

मनुष्य अपने को अपने पूर्व इतिहास से अलग करने में असमर्थ-सा है। वह सदैव पूर्ववर्ती बातों के प्रति चैतन्य रहता है और अपने पूर्व अनुभवों पर ही अपने विचारों और कार्यों का निर्माण करता है। जब उसके सामने उसकी अपनी कोई परम्परा नहीं होती अथवा जब वह रूढ़ि के रूप में जड़ हो जाती है, तो मानव-संस्कृति का विकास रुक जाता है। इसलिए जब किसी भूतकालीन संस्कृति से आज की संस्कृति का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, तो उसका यही अर्थ होता है कि हमारी वर्तमान संस्कृति की परम्परा का निर्माण जिन लोगों द्वारा हुआ है वे हमारी ही तरह अनुभूत होकर सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप में आगे बढ़े थे। हम उसकी महत्ता उसी अनुपात से समझ सकते हैं जिस परिमाण में उनकी संस्कृति-शृंखला हमारी संस्कृति-शृंखला से जुड़ी होती है।

आज से कुछ वर्षों पूर्व—ईसा की इस शताब्दी से पूर्व—भारतीय सभ्यता, संस्कृति और इतिहास की आयु ढाई-तीन हजार वर्ष से अधिक पुरानी नहीं आँकी जाती थी और उसी को आधार मान कर लोग आगे बढ़ने की चेष्टा करते थे। उस समय लोगों को यहाँ की आदिम काल की सभ्यता और संस्कृति बहुत ही उन्नत और विकसित अवस्था में मिलती थी, पर उसके विकास का इतिहास लोगों के सामने न था। इस कारण लोग हमारी संस्कृति देख कर अवाक् रह जाते थे; किन्तु आज पुरातत्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्धी खोज के परिणाम स्वरूप लोगों के सामने यह बात तथ्य बन कर आयी है कि भारत की सांस्कृतिक विकास का आरम्भ पाँच हजार वर्ष से कहीं अधिक पूर्व हुआ था और आज सभ्यता के तत्कालीन श्रोत में घुस कर यह जाना जा रहा है कि स्थान और परिस्थितियों में पड़ कर मनुष्य के जीवन ने जो विभिन्न रूप धारण किये हैं उनका मूल श्रोत एक था। अब हम यह अनुभव करने लगे हैं कि भूत के इस ज्ञान के प्रकाश में वर्तमान और भविष्य की उन्नति की कल्पना और उसका नियन्त्रण किया जा सकता है।

* * *

हम संग्रहालयों की आलमारियों में जो नाना प्रकार के बर्तन, गहने, औजार, मनके आदि बड़े यत्न से सजे हुए देखते हैं, तो स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि पुरातत्वविद् उनके आधार पर किस प्रकार अतीत की अवस्था का अनुमान करता है। पर सच बात तो यह है कि पुरातत्वविद् की दृष्टि में उनका कोई महत्त्व नहीं होता। उसके लिए उनका महत्त्व उसी समय होता है जब वह भूमि में अन्य वस्तुओं के साथ दबे पाये जाते हैं। वहाँ से हटाये जाने के बाद उनकी पुरातात्विक महत्ता समाप्त हो जाती है और संग्रहालयों में उनका संग्रह केवल कला की दृष्टि से किया जाता है।

पुरातत्व की दृष्टि से अध्ययन के निमित्त प्राचीन काल की वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित और विशेष ढंग से खुदाई करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी आकस्मिक खुदाई में भी महत्त्व की वस्तुएं मिल जाती हैं, पर इस प्रकार की खुदाई करने वालों का उद्देश्य अधिकांशतः पुरातात्विक न होकर कला-सम्बन्धी अथवा किसी प्रकार का आर्थिक ही होता है और वह वहीं तक सीमित भी रहता है। पुरातत्वविद् मानव होने के नाते अलभ्य और कलात्मक वस्तुओं का आनन्द तो लेता है, किन्तु साथ ही वैज्ञानिक होने के नाते उनके सम्बन्ध में अधिकाधिक जानने के लिए उत्सुक भी रहता है और उन वस्तुओं के सम्बन्ध में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जानकारी ही उसके सम्मुख प्रधान विषय होता है। उसके लिए खुदाई का अर्थ बहुत कुछ निरीक्षण, परीक्षण, संग्रह और व्यवस्था होती है। सुव्यवस्थित ढंग और अललटप्प तरीके से काम करने वालों की कार्य-प्रणाली में महान् अन्तर होगा, यह तो स्पष्ट ही है, किन्तु उनके कार्यों के परिणाम में भी महान् अन्तर होता है यह पुरातत्व में प्रत्यक्ष लक्षित होता है।

मान लीजिये किसी किसान को कहीं किसी खेत में हल चलाते या खोदते समय कोई पत्थर या धातु की मूर्ति, वर्तन, औजार या गहना मिल जाता है। वह एक दूसरे के हाथ से होता हुआ बाजार में बिकने आता है और फिर दूकानदार के यहाँ से किसी संग्रहालय या किसी निजी संग्रह में पहुँच जाता है। ऐसी अवस्था में किसी को मालूम नहीं हो पाता कि वह कहाँ से और किस अवस्था में प्राप्त हुआ। वह अपनी परिस्थि-तियों से इस प्रकार अलग कर दिया गया होता है कि उसका निजस्व उसी तक सीमित रह जाता है। ऐसी अवस्था में कला की दृष्टि से तो उस वस्तु की सराहना की जा सकती है, पर प्रश्न यह होता है कि उसका ऐति-हासिक महत्त्व क्या है अथवा उससे ऐतिहासिक तथ्य पर क्या प्रकाश पड़ता है।

कलकत्ता के भारतीय संग्रहालय में नव्य-प्रस्तरयुग की वस्तुओं का एक विशाल संग्रह है। यह सामग्री विभिन्न व्यक्तियों ने विभिन्न स्थानों और विभिन्न समयों में एकत्र की थी। उनके सम्बन्ध में आज किसी प्रकार की जानकारी संग्रहालय में प्राप्त नहीं है। फल स्वरूप यह पह-चानते हुए भी कि वे नव्य-प्रस्तर युग की चीज़ें हैं, आज हम उस काल की संस्कृति की रूपरेखा के सम्बन्ध में किसी प्रकार का अनुमान नहीं कर सकते। मथुरा के कर्जन संग्रहालय में उस क्षेत्र से प्राप्त मूर्तियों का एक बहुत अच्छा संग्रह है। उनसे मथुरा की कला-शैली के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी हुई है पर उनके आधार पर हम वहाँ के विभिन्न काल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के इतिहास पर प्रकाश नहीं डाल सकते। इसका एक मात्र कारण यही है कि वे आज उन परिस्थितियों से अलग कर दी गयी हैं जिनमें वे दबी हुई थीं। वहाँ परखम नामक स्थान से प्राप्त सुप्रसिद्ध मूर्ति के सम्बन्ध में कुछ लोगों का कहना है कि वह यक्ष की मूर्ति है लेकिन कुछ लोग उसको द्वारपाल बताते हैं। परिस्थितियों से वह इस प्रकार अलग हो गयी है कि यक्ष-पूजा के प्रमाण की सामग्री होते हुए भी हम आज उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकते। इसी प्रकार नागपुर के संग्रहालय में बेलननुमा मुहर है जिसकी रूपरेखा बवेरु में पायी जाने वाली मुहरों के समान है और उस पर आलेख भी उसी ढंग का है। पर वह कहाँ से और किस परिस्थिति में प्राप्त हुआ था यह किसी को ज्ञात नहीं है, इस कारण आज हम यह अनुमान करने में असमर्थ हैं कि उस मुद्रा का भारत से किसी प्रकार का सम्बन्ध है।

जब कभी ऐसी अवस्था में प्राचीन वस्तुएं मिलती हैं तो विद्वानों को अपने पूर्व संचित ज्ञान के बल पर अनुमान करना पड़ता है कि वह किस प्रदेश और किस काल की वस्तु है। यदि किसी प्रकार इस अनुमान का तुक लगा तो उस वस्तु के सम्बन्ध में यह भी अटकल लगाना होता है कि किस कला-शैली से उसका सम्बन्ध है। इस प्रश्न पर साधारणतया अधिकांश विद्वान एक मत नहीं हो पाते। जब इस प्रश्न पर एक मत नहीं होता तो वह विद्वानों के लिए एक पहेली और जनसाधारण के लिए उलझन बन कर रह जाता है।

यदि कहीं दुर्भाग्यवश प्राप्त वस्तु कोई मिट्टी का बर्तन हो या कोई ऐसी वस्तु हो जिसका कोई कलात्मक महत्त्व न हो तो ऐसी अवस्था में उस वस्तु का ऐतिहासिक महत्त्व चाहे कितना भी रहा हो, नष्ट हो जाता है। सन् १९०४ में एक सरकारी कर्मचारी को बलूचिस्तान के किसी भाग में कुछ चित्रित मृणपात्र मिले थे, पर जिस प्रकार वे प्राप्त हुए उनके कारण उस समय कोई भी यह अनुमान न कर सका कि वे पात्र ताम्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

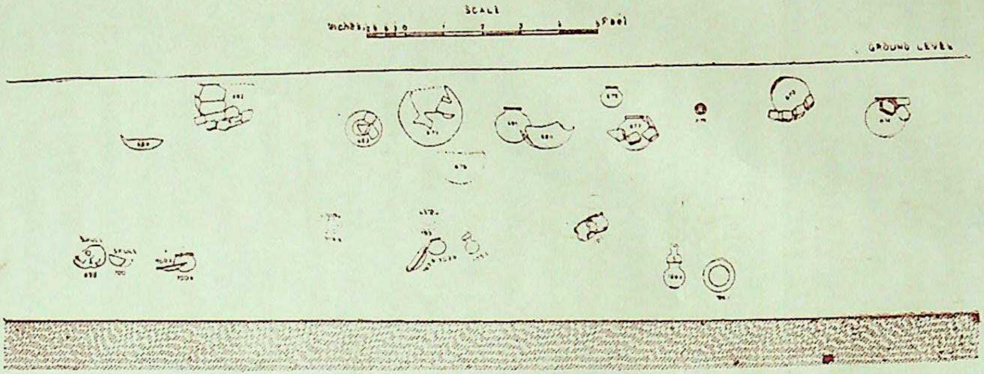

हड़प्पा के समाधि स्थल के दो स्तर (पृष्ठ ६१)
[भारतीय पुरातत्व विभाग से]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

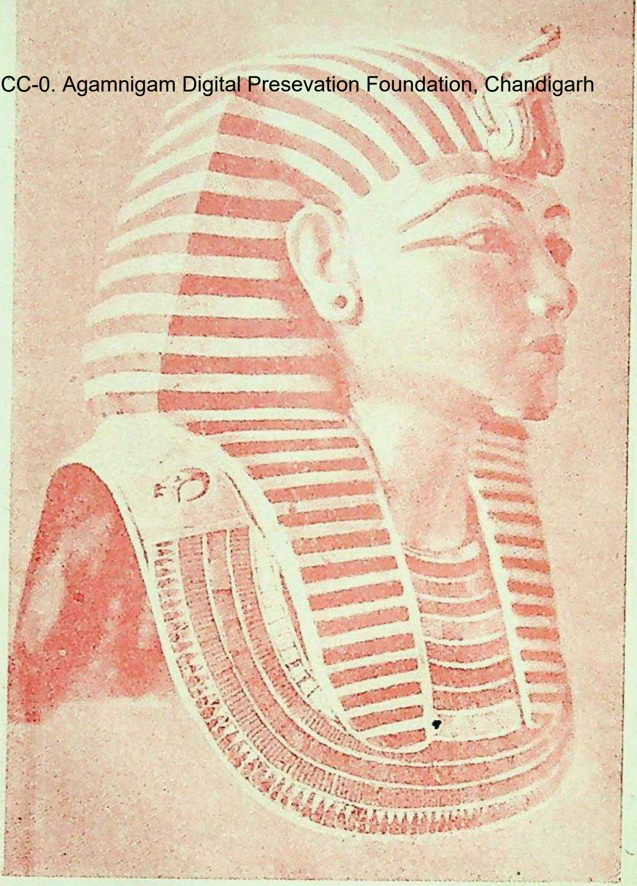

तूतन-खमन (पृष्ट, ६०)
[काहरा संग्रहालय से]

भारत और मैसोपोटामिया के बीच सम्बन्ध व्यक्त करने वाला एक फलक (पृष्ट ७८)
[शिकागो विश्वविद्यालय की प्राच्यशाल]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
युग के हैं। २६ वर्ष बाद जब सर ग्रारेल् स्टेन् ने उस क्षेत्र के विभिन्न खंडहरों की छानबीन की तो यह बात प्रकाश में ग्रायी कि बलूचिस्तान के खंडहरों में भारत की ताम्रयुगीन संस्कृति दबी पड़ी है। इसी प्रकार हड़प्पा से गत शताब्दी में ही एक मुद्रा मिली थी पर उस समय यह कल्पना भी न हो सकी कि वह सैन्धव-सभ्यता की प्रतीक है। जब उसी ढंग की मुद्रायें मोहें-जो-दड़ो में मिलीं तब लोगों का ध्यान उस मुद्रा की ग्रोर गया ग्रौर सर जान मार्शल ने हड़प्पा की खुदाई का ग्रायोजन किया।

इसके साथ ही यदि इस प्रकार की एकाकी पायी जानें वाली वस्तुग्रों के सम्बन्ध में गलत सूचनाएं प्राप्त हों, तो उनसे भी उस वस्तु के वास्तविक महत्त्व के ग्राँकने में भयंकर भूल हो जाती है। सबसे पहले डाक्टर भंडारकर ने मोहें-जो-दड़ो का निरीक्षण किया था। पर वहाँ पायी जाने वाली छोटे ग्राकार की ईंटों को देख कर उनकी यह धारणा हुई कि वह स्थान बहुत पुराना नहीं है। इस प्रकार एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बहुत दिनों तक उपेक्षित बना रहा ग्रौर भारत की एक प्राचीन संस्कृति प्रकाश में न ग्रा सकी। यह तो साधारण सी बात है। कुछ ग्ररबवासियों को शाम के किसी धार्मिक स्थान के ध्वंसावशेष में चाँदी का एक पात्र मिला जिस पर कुछ उत्कीर्ण चित्र ग्रंकित थे। इनमें से कुछ चित्रों की पहचान सफलता पूर्वक ईसा ग्रौर उनके शिष्यों से की जा सकती थी। वह पात्र किसी प्रकार ग्रमेरिका पहुँचा। उसके विक्रेता के सम्मुख कहानी थी—वह ग्रन्तिग्रोख में प्राप्त हुग्रा है; ग्रौर ईसा के शिष्य वहीं सर्व प्रथम ईसाई नाम से पुकारे गये थे। बस इसी ग्राधार पर लोगों को विश्वास दिलाने की चेष्टा की गयी कि वह वही पवित्र पात्र है जिसका उपयोग ईसा के ग्रन्तिम भोज के ग्रवसर पर किया गया था ग्रौर उस पर तत्कालीन शिष्यों के चित्र ग्रंकित हैं। पर वास्तविक बात तो यह थी कि वह ग्रन्ति-ग्रोख से सौ मील से भी ग्रधिक दूर प्राप्त हुग्रा था ग्रौर उसकी शैली देखने से जान पड़ता था कि उसका निर्माण ईसा की मृत्यु से कम से कम तीन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौ वर्ष बाद हुआ होगा। इस प्रकार का भ्रम उत्पन्न हो जाने पर उनका दूर करना बहुत कठिन होता है और उस वस्तु की पुरातात्विक महत्ता नष्ट हो जाती है। इस पात्र के सम्बन्ध में पुरातात्विक ज्ञान को हानि कम पहुँची क्योंकि झूठी कहानी का जानबूझ कर प्रचार किया गया था और उसका उद्देश्य भी स्पष्ट ही था। उससे कुछ व्यक्तियों को धोखा भले ही हुआ हो, किन्तु कला-विशारदों को ईसा पश्चात् की प्रथम चार शताब्दियों का ज्ञान जो अन्य साधनों से प्राप्त हुआ था, उसमें उन्हें किसी प्रकार का उलट फेर न करना पड़ा। किन्तु जहाँ किसी वस्तु के सम्बन्ध में जानकारी अस्पष्ट या अधूरी होती है, वहाँ अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से विलग की हुई वस्तु विशेषज्ञों को भी भ्रम और सन्देह में डाल देती है। एक पाश्चात्य विद्वान् को चीन से प्राप्त काँस्य की एक सिंह की मूर्ति, जो मूल रूपेण सम्भवतः चीन की कला है, हितानी कला के कतिपय ज्ञात अवशेषों से मिलती-जुलती जान पड़ी। इसी आधार पर उन्होंने उसका सम्बन्ध हितानी कला से जोड़ दिया और उसे अन्य हितानी कला वस्तुओं के परखने का माप-दंड बनाया। इस प्रकार के अनुमान से सत्य के निकट पहुँचने की अपेक्षा उससे दूर जा पहुँचने की अधिक सम्भावना होती है। रस्किन ने अपने कला विषयक निबन्ध में भारतीय-कला को भारतीय दृष्टि से न देख कर यवन-कला के चश्मे से देखने का यत्न किया है, इसी कारण उसे यहाँ की कला में भीमकाय आकृतियों के सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ा है। कुछ साल पहले सारनाथ में कुछ पीतल की मूर्तियाँ मिली थीं। उन्हें देख कर लोगों ने अनुमान किया था कि वे वहीं ढाली गयी होंगी। पर उसी ढंग की मूर्तियाँ जब नालन्दा की खुदाई करने पर मिलीं तो यह जान पड़ा कि वे किसी एक स्थान की न होकर पूर्वीय मध्यकालीन संस्कृति की द्योतक हैं। इस प्रकार के अपूर्ण ज्ञान के आधार पर अनुमानित विवेचन के कारण बहुधा भ्रम उत्पन्न हो जाया करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके विपरीत, ऐसी वस्तु, जिसका अपना कुछ भी मूल्य न हो केवल अपने सहयोग और परिस्थिति के कारण उच्चतम महत्त्व का ऐतिहासिक साधन हो सकता है। मोहें-जो-दड़ो के ऊपरी सतह पर जो मुद्रायें मिली थीं उनका महत्त्व तभी आँका जा सका जब मिट्टी में दबे पत्थर की एक छुरी से स्वर्गीय राखालदास बनर्जी का हाथ कट गया। यदि वह पत्थर की छुरी अपने स्थान पर दबी न मिलती तो यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि उसके नीचे ताम्रयुगीन सभ्यता दबी पड़ी है। जयपुर राज्य में बैराट नामक स्थान में खुदाई के समय एक स्तूप मिला जिसमें पत्थर का प्रकार बना था। शिला-प्रकारों को देखने से ऐसा आभास होता था कि उनसे पूर्व वहाँ काष्ट का प्रकार रहा होगा। पर इस धारणा की पुष्टि के लिए प्रमाण की आवश्यकता थी। शिला-प्रकार के नीचे जो छेद थे उनमें लकड़ी के जले हुए कोयले मिले, उनसे यह स्पष्ट हो गया कि मौर्यों के पतन से पूर्व उस स्तूप में काष्ट का प्रकार था जो पीछे जल गया। यदि लकड़ी के कोयले न मिलते तो इस धारणा की पुष्टि न हो पाती। इसी प्रकार रोडेशिया (दक्षिण आफ़्रिका) के ज़िमबाब्व नामक स्थान के कुछ प्रास्तरिक ध्वंसावशेष बहुत दिनों से पुरातत्वविदों को उलझन में डाले हुए थे। उनके सम्बन्ध में नाना प्रकार की किंवदन्तियाँ प्रचलित थीं। कोई कहता उनका निर्माण फोनेशिया निवासियों ने किया। कोई कहता वह ओफीर था। वहाँ सुलेमान को सोना मिला था। कोई उसे मिस्र की सीमा की चौकी बताता। लेकिन जब वैज्ञानिक पद्धति पर उसकी खुदाई हुई और उसके नींव में एक निरर्थक चीनी (पोरस्लेन) का टुकड़ा मिला तो यह प्रमाणित हो गया कि वह भग्नावशेष मध्यकालीन मन्दिर था जो अफ़्रीका की अपनी निजी शैली में बना था। यदि उसी स्थान की खुदाई केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से बेतुके ढंग से की जाती तो चीनी (पोरस्लेन) के टुकड़े की ओर या तो ध्यान ही न जाता और यदि जाता भी तो उसकी साक्षी पर कोई विश्वास न करता। उस समय जिस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ढंग से खुदाई की जाती उसके कारण लोग उसको वैज्ञानिक प्रमाण मानने में संकोच करते। किन्तु वैज्ञानिक पद्धति पर खुदाई करने के परिणाम स्वरूप वह टुकड़ा जिस अवस्था में प्राप्त हुआ था उस पर किसी को सन्देह करने की गुंजाइश न थी। उसने न केवल किंवदंतियों से फैले भ्रम को दूर कर दिया वरन् आफ्रिका के इतिहास में नवीन पृष्ठ भी जोड़े।

* * *

धन के लिए पुराने स्थानों की खुदाई शायद उतनी ही पुरानी है जितना कि मनुष्य और उसकी सभ्यता, पर ज्ञान प्राप्ति के लिए पुरातत्व विज्ञान का विकास अभी हाल ही में हुआ है। इस विज्ञान ने अपने जीवन के साठ-सत्तर वर्ष में ही कितने ही आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाये हैं। सुव्यवस्थित खुदाई द्वारा ही आज हम मानव-इतिहास के उन हजारों वर्षों को जान सके हैं जिनके सम्बन्ध में एक शताब्दी पूर्व हम एक दम कोरे थे। इतना ही नहीं, लिखित साधनों पर अवलम्बित इतिहास से हमें केवल युद्ध, कुछ अन्य राजनीतिक घटनायें और राजवंशावलियाँ ही ज्ञात होती हैं, वे भी वही जिन्हें तत्कालीन लेखकों ने लिखना उचित समझा। प्राचीन साहित्य से जो कुछ प्रकाश तत्कालीन अवस्था पर पड़ता है, उसका पुरातात्विक अन्वेषण से समर्थन तो हुआ ही है, साथ ही विगत काल के उद्योग और कला के उज्ज्वल नमूने, उपासना के मन्दिर, निवास के गृह, और जीवन के वातावरण भी अपने मौलिक रूप में प्रकाश में आये हैं। इस प्रकार पुरातत्व हमारे सामने विगत काल का सामाजिक इतिहास उपस्थित करता है साथ ही उसके जानने का वह साधन भी उपस्थित करता है जो अन्य साधनों से दुष्प्राप्य है।

जब तक मोहें-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई नहीं हुई थी हम सैन्धव-सभ्यता की कल्पना भी न कर सके थे। श्लीमैन के मेसिने और सर आर्थर ईवान्स के क्रीट की खुदाई करने पर ही मिन सभ्यता का ज्ञान हो सका। इसके सम्बन्ध में एक शब्द भी लिखित प्राप्त न था,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
फिर भी आज हम मिन शक्ति के उत्थान और पतन का इतिहास जान सकने में समर्थ हुए हैं। आज हम मिन के राजप्रासाद की भव्यता और विशालता को उसी रूप में आँक सकते हैं जिस रूप में वह अपने समय में रहा होगा। मिस्र का सारा प्राचीन इतिहास पुरातात्विक प्रयत्नों से ही प्रकाश में आ सका है और वह भी अद्भुत विस्तार के साथ। आज सुमेर और हितानी के भूले हुए साम्राज्यों और बवेरु, असुर और मोहें-जो-दड़ो के प्राचीन निवासियों के जीवन का जो ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है, वह खुदाई का ही प्रताप है। इस प्रकार के ज्ञान का विस्तार यूरोप, मध्य अमेरिका, चीन, तुर्किस्तान, भारत आदि देशों में की जाने वाली खुदाइयों से नित्यप्रति बढ़ता जा रहा है और विगत काल के मनुष्यों के प्रति हमारी जो धारणाएं थीं उनमें परिवर्तन होता जा रहा है।

* * *

पुरातात्विक खुदाई में निकली वस्तुओं और उनके ऐतिहासिक महत्त्व को देख कर साधारण मनुष्य के मन में कौतूहल होता है कि आखिर ये वस्तुएं किस प्रकार भूमि में दब जाती हैं और फिर उनके खोद निकालने की आवश्यकता होती है।

पुरातत्व की दृष्टि से समाधि और समाधि-स्थल बड़े महत्त्व के समझे जाते हैं और पुरातात्विक ज्ञान के महत्त्वपूर्ण खजाने कहे जाते हैं। जहाँ तक प्रश्न का सम्बन्ध इनसे है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि वहाँ मिलने वाली वस्तुएं प्रायः जान बूझ कर रखी गयी होती हैं जो अब तक सुरक्षित दशा में पायी जाती हैं। यह प्रश्न उस समय उठता है जब हम भवनों और नगरों को भूमि-तल के नीचे अदृश्य और दबा पाते हैं। वस्तुतः बात यह है कि नगर और उसके भवन भूमि-तल के नीचे नहीं दबते, वरन् भूमि-तल ही धीरे-धीरे ऊपर को उठती है। यद्यपि इस क्रिया का हमें आभास नहीं होता तथापि यह नित्य हमारे चारों ओर होता रहता है। जहाँ भी कोई स्थान निरन्तर बसा रहा है, यह बात होती रही है। प्राचीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काल में नगरों की सफाई के लिए आजकल की तरह की व्यवस्था बहुत कम थी। गलियाँ ही कूड़ा कर्कट फेंके जाने के स्थान रहे हैं। आज भी अनेक स्थानों पर गलियों में ही कूड़ा फेंका जाता देखते हैं। इस तरह निरन्तर कूड़ा फेंके जाने के कारण गलियों का धरातल धीरे-धीरे ऊँचा होने लगता है। यदि गलियों की फिर से मरम्मत हुई और कंकड़ ऊपर ही डाल दिया गया तो गली का धरातल स्वतः ऊँचा और उस गली के मकानों का धरातल नीचा हो जाता है। ऐसी अवस्था में जब कभी मकान ध्वस्त होता है और नये सिरे से उसका निर्माण किया जाता है तो, निश्चय ही गली के धरातल का ध्यान रख कर उसका धरातल बनाया जाता है। ऐसी अवस्था में यह निश्चित है कि वह धरातल मकान के पहले धरातल से ऊँचा होगा और पहला फर्श नीचे पट जायेगा अथवा पाट दिया जायेगा। इस प्रकार पुराने मकानों की नींव अछूती ही दब जाती है। यही व्यवस्था एवं परिवर्तन समय-समय पर होते रहते हैं और एक के ऊपर एक मकान के चिह्न अक्षुण्ण रूप से दबते चले जाते हैं। इसके स्पष्ट चिह्न प्राचीन स्थानों के भग्नावशेषों को खोदने से तो मिलते ही हैं, यदि आज भी काशी को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यही बात दिखाई पड़ेगी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई स्थान थोड़े काल तक बसा रहा फिर उजड़ गया। वहाँ प्रकृति उसके ध्वस्त होने और भूमि में दबने में सहायक होती है। कभी-कभी प्राकृतिक आपदाओं से भी नगर ध्वस्त हो जाते हैं। भूकम्प के कारण नगर ध्वस्त होते और लोगों को उसके नीचे दब मरते हमने अपनी आँखों अभी पिछले बिहार भूकम्प के समय देखा है। ऐसी घटनाएं हमारे देश में अनेक बार हुई हैं। मत्स्य पुराण में लिखा है कि 'सौवीर आभीरोंके स्त्रीपुरुष के पापाचार के कारण देवताओं ने शाप दे दिया जिससे नगर भूगर्भ में चला गया।' स्पष्टतः यह भूकम्प से नष्ट हुए नगर की ओर संकेत है। इसी तरह द्वारका के जलमग्न हो जाने के साक्षी महाभारत और पुराण हैं। भूकम्प के कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
ही पिछली शताब्दी में पूर्वी किनारे के सौ मील की पट्टी जलमग्न हो गयी। भूकम्प के कारण ही सुन्दरबन दलदल बन गया है।

कभी-कभी ज्वालामुखी के प्रज्वलन से भी नगर भूमिस्थ हो जाते हैं, पर ऐसी घटनाएं इतिहास में बहुत कम हुई हैं। इस तरह ध्वस्त नगर के अवशेष के रूप में अब तक पाम्प्याई (इटली) ही एक मात्र उदाहरण है। वहाँ के अद्वितीय रूप में सुरक्षित मकान, अब तक खड़े हुए दुतल्ले भवन, उनके भित्तिचित्र तथा आपत्ति के समय नगरवासियों द्वारा छोड़े गये सामान को आज भी अविकल रूप में सुरक्षित देख कर लोग आश्चर्य-चकित रह जाते हैं। बात यह है कि ऐसी आकस्मिक आपत्तियों के समय लोग अपनी चीजें लेकर भाग नहीं पाते या कम भाग पाते हैं।

कभी-कभी शत्रु द्वारा आग लगाये जाने से भी नगर ध्वस्त हो जाते हैं। ऐसे स्थानों के उदाहरण में तक्षशिला का नाम लिया जा सकता है। हूणों के आक्रमण के समय वह उजड़ गया तब से वह एक दम वीरान ही रहा। शत्रु के आक्रमण के समय भी नागरिक अपनी सारी गृहस्थी उठा कर भागने में असमर्थ होते हैं, और आक्रमणकारी लोग भी वही चीजें लूट कर ले जाते हैं जो उनकी दृष्टि में कीमती होती हैं। आग भी सभी चीजों को जला नहीं पाती। निदान बची हुई चीजें ऊपर की सतह से गिरी राख, ईंट और मिट्टी के नीचे दब जाती हैं और वहाँ तब तक पड़ी रहती हैं जब तक लोग उन्हें खोद निकालने की चेष्टा नहीं करते। इस प्रकार अग्नि द्वारा नष्ट स्थान भी प्रायः पुरातत्व की दृष्टि से सुरक्षित समझे जाते हैं।

नगरों के उत्थान और पतन की गति कहीं तीव्र और कहीं अत्यन्त मन्द होती है। जहाँ पतन की गति तीव्र होती है वहाँ पुरातात्विक महत्त्व की चीजें अधिक मिलती हैं। जब कभी ध्वंसावशेषों में महत्त्व की चीजें कम मिलती हैं तो समझा जाता है कि पतन की गति मन्द रही होगी अथवा ऐसा अनुमान होता है कि लोग पुराने भवनों की सामग्री नये भवन बनाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए दूसरे स्थानों पर उठा ले गये होंगे। बहुत दिनों की बात नहीं है जब सारनाथके ध्वंसावशेषों के बहुत बड़े भाग का उपयोग बनारस के डफरिन ब्रिज (राजघाट का पुल), वरुणा का पुल (जो १९४४ की बाढ़ में ढह गया) और क्वींस कालेज के भवन के बनाने में किया गया था। इसी प्रकार हड़प्पा की ईंटों का उपयोग ठेकेदारों ने नार्थ वेस्टर्न रेलवे की अनेक इमारतों के बनाने में किया है। जहाँ ऐसी बातें होती हैं वहाँ ऊपरी भाग में महत्त्व की चीजें बहुत कम मिलती हैं और जो मिलती हैं उनसे इतिहास का पूर्ण चित्र बना सकना सम्भव नहीं होता।

प्राचीन नगर या भवन किसी न किसी प्रकार भूमिस्थ हो जाते हैं यह मान लेने पर लोगों के मन में दूसरी स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि पुरातत्वविदों को उनका पता कैसे लगता है।

किसी नगर या भवन के भूमिस्थ हो जाने का सदैव यह अर्थ नहीं होता कि वह भूगर्भ में एक दम लुप्त हो ही जाय। प्रायः भूमि के वाह्य स्तर पर कोई न कोई चिह्न ऐसे रहते ही हैं जिनसे पुरातत्वविद् को उसके प्राचीनता का संकेत मिल जाता है। हमारे तथा हमारे पड़ोसी पच्छिमी देशों में, यथा—मिस्र आदि में भूमि से ऊँचे उठे टीलों के समूह पाये जाते हैं जो साधारणतया किसी न किसी प्राचीन नगर अथवा स्थान की ध्वस्त अवस्था को व्यक्त करते हैं। हमारे देश में साधारणतया ऐसे स्थलों के सम्बन्ध में, जो कभी महत्त्वपूर्ण स्थल रहे हैं, आसपास के निवासियों में कुछ न कुछ जनश्रुति प्रचलित होती है। इनमें यद्यपि ऐतिहासिक तथ्य की मात्रा अधिक नहीं होती फिर भी उनसे उस स्थान की प्राचीनता तथा महत्ता का कुछ न कुछ आभास मिलता ही है। अतः ये जनश्रुतियाँ, किंवदंतियाँ अथवा प्रवाद पुरातात्विक महत्त्व के स्थानों के निर्णय में बहुत सहायक होते हैं। बलिया जिले के रसड़ा तहसील में खैराडिह नामक एक गाँव है। उस ओर पुरातत्व विभाग का ध्यान कम गया है। उसके सम्बन्ध में वहाँ के लोगों में प्रवाद है कि वह भार्गव मुनि का स्थान है। यद्यपि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इस कथन में कोई सार नहीं जान पड़ता पर उस गाँव के उस भाग को, जो घाघरा के किनारे है, देखने से उस स्थान की प्राचीनता का आभास मिलता है। घाघरा अपने किनारे के हिस्से को समूचा बहा ले गयी है। अतः उसके किनारे के भाग को देखने से टीले के भीतर अनेक युग के भवनों के स्तर एक के ऊपर एक दिखाई पड़ते हैं। परीक्षण से जान यह पड़ता है कि वह गुप्त-युग में कोई समृद्धिशाली नगर रहा होगा। कुरुक्षेत्र में मीलों तक बिखरे टीले पाये जाते हैं। लोग उनको राजा कर्ण का टीला कहते हैं। उस क्षेत्र को, मद्र देश से बहुत दूर होने के कारण, हम राजा कर्ण की राजधानी नहीं कह सकते। पर उसकी खुदाई करने पर राजप्रासादों के चिह्न प्राप्त हुए हैं। प्रवाद में सत्य की मात्रा न होने पर भी स्थान की प्राचीनता का संकेत तो पाया ही जाता है।

पर प्रवाद अथवा जनश्रुति के सहारे कभी-कभी पुरातत्वविदों को धोखा भी हो जाता है। ढाका जिले में स्थित समहार नामक स्थान को लोग जनश्रुतिके आधार पर प्राचीन बंगाल के शासक राजा रामपाल की राजधानी रामावती मानते थे। इसी जनश्रुति के आधार पर १९२९ में उस स्थान की खुदाई की गयी पर वहाँ एक भी वस्तु ऐसी नहीं मिली जिससे इस प्रवाद का समर्थन हो सके। इसी प्रकार दिल्ली में 'इन्द्रप्रस्थ का किला' नाम से प्रसिद्ध जो ध्वस्त दुर्ग है, उसको जन-प्रवाद के अनुसार लोग महाभारतकालीन वह किला बताते हैं जिसे पांडवों ने बनवाया था। पर वहाँ आज तक कोई प्राग्मुसलिम चिह्न प्राप्त नहीं हुआ जिससे इस धारणा का समर्थन हो सके। अब तक जो प्रमाण प्राप्त है उनसे यही जान पड़ता है कि उसे शेरशाह ने बनवाया था और उसी पर से गिर कर हुमायूँ मरा था।

कभी-कभी टीलों वाले स्थान का नाम प्राचीन साहित्य में उल्लिखित किसी महत्त्वपूर्ण स्थान से मेल खाता हुआ दिखाई पड़ता है, साथ ही उसका कुछ भौगोलिक सादृश्य भी जान पड़ता है। इन सूत्रों के सहारे भी उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान की प्राचीनता और महत्ता आँकी जाती है। पुरातत्वविद् किसी स्थान के महत्त्व के आँकने में इन सब बातों का सहारा लेता तो है पर उस पर वह एक दम निर्भर नहीं करता क्योंकि उस पर निर्भर करना अकसर खतरे से खाली नहीं रहता। अतः इन बातों को ध्यान में रखते हुए वह स्थानीय प्रमाण भी ढूँढ़ने की चेष्टा करता है।

कभी-कभी तो ऐसा होता है कि इन टीलों के ऊपर ही भवन का थोड़ा बहुत भाग बाहर निकला रहता है। उससे पुरातत्वविद् को उस स्थान की प्राचीनता निश्चय करने में सहायता मिलती है। सारनाथ का महत्त्व धमेख स्तूप के ऊपरी भाग को देख कर ही आँका गया था जो टीले के ऊपर निकला हुआ था। पर ऐसा बहुत कम स्थानों में सम्भव होता है।

ऊपर यदि इस प्रकार वास्तु का कोई चिह्न नहीं है तो भी टीले के भीतर यदि ईंट का कोई वास्तु है तो वह मिट्टी का रंग देख कर मालूम हो जाता है। साधारणतः वहाँ की मिट्टी का रंग लाल हो जाया करता है। जो स्थान किसी समय निवास स्थल रहा हो, वहाँ मिट्टी के बर्तन आदि अवश्य पड़े रहते हैं, जो हल चलाने के समय निकल-निकल कर अपने प्राचीन अस्तित्व का परिचय देते हैं। आजमगढ़ जिले में घोसी नामक स्थान पर विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ एक बहुत ऊँचा टीला है। जन-प्रवाद के अनुसार वह राजा नहुष का कोट कहा जाता है। उस टीले पर किसान लोग खेती करते हैं। वहाँ हल जोतते समय अकसर मृण्मूर्तियाँ निकला करती हैं। इन मृण्मूर्तियों के देखने से पता चलता है कि वह कुषाण काल में समृद्धिशाली स्थान रहा होगा। इस प्रकार देश भर में अनेक स्थानों पर प्राचीनता के संकेत प्राप्त हुए हैं।

जिन स्थानों पर पत्थर की इमारतें बनी रही होती हैं, वहाँ पत्थर के नकाशीदार टुकड़े टीले की भीतर की वास्तु का संकेत देते हैं। इनके अतिरिक्त बरसात के बाद टीले की मिट्टी बह जाने पर ठीकरे, मनके,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुहरें, मुद्राएं आदि ऊपरी सतह में पायी जाती हैं जिनसे पुरातात्विक महत्त्व के टीलों का पता लगता है। अधिकांश स्थानों पर मिट्टी के टीकरे आदि निरर्थक वस्तुएँ ही पुरातात्विक खोज में सहायक होती हैं।

जहाँ ऊपरी तह में इस प्रकार का कोई चिह्न नहीं मिलता, वहाँ भी पुरातत्वविद् की आँखें कोई न कोई संकेत पा ही जाती हैं। भूगर्भ में छिपी पक्की दीवारों के ऊपर की मिट्टी में घास अथवा शस्य आस-पास के घास अथवा शस्य की अपेक्षा कम वलवती होगी। इससे भी पुरातत्व-विद् को मनोवांछित संकेत मिल जाता है। कभी-कभी इस प्रकार की भूमि का ज्ञान पृथिवी के धरातल से नहीं हो पाता। ऐसी अवस्था में आजकल पुरातत्वविद् वायुयान की सहायता लेकर आकाश से निरीक्षण करते हैं और उस स्थान का चित्र उतारते हैं। यह प्रणाली देखने में विचित्र सी जान पड़ती है पर उससे बहुत कुछ अंशों में पृथिवी के भीतर का रहस्य प्रकट हो जाता है और पुरातत्वविद् समय की बचत के साथ-साथ खुदाई के उपयुक्त स्थान का निश्चय कर लेता है। अभी कुछ ही दिनों पहले इस पद्धति से केस्टर नामक एक प्राचीन रोमन ग्राम का पूरा-पूरा मानचित्र तैयार किया गया था। आकाश से लिये गये चित्रों को देख कर ही अज्ञात केस्टर की स्थिति का पता लगा और वहाँ के भवनों की खुदाई की गयी। इस प्रकार मीलों तक रोमन सड़कों और सीरिया के सपाट रेगिस्तान में दबे कितने ही पड़ावों की भी जानकारी प्राप्त की जा सकी। उडहेज नामक स्थान के आकाश चित्रों ने तो पुरातत्व-विज्ञान में एक नवीन आश्चर्य उत्पन्न कर दिया है। वहाँ सपाट किन्तु जुते हुए खेतों के कुछ चित्र लिये गये। चित्र लिये जाने पर चित्रों में विन्दुओं के अनेक केन्द्रित वृत्त दिखाई पड़े, जो हजारों वर्ष पूर्व खड़े किये गये लकड़ी के स्तम्भों के खाली छेद थे। बात यह है कि जिस भूमि के नीचे वास्तु आदि दबे होते हैं, उसमें बरसने वाले पानी के सोखने की शक्ति अपने अगल-बगल की भूमि से, जहाँ कोई वास्तु नहीं होता, एकदम भिन्न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती है। इस कारण ऊपर पड़ी हुई मिट्टी की नमी में भिन्नता होती है। यह भिन्नता जमीन से देखने पर पता नहीं चलता, पर आकाश से देखने में अन्तर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है। इस वैज्ञानिक तथ्य के सहारे बिना खुदाई किये ही भूमि में दबे वास्तु की रूपरेखा का अनुमान किया जा सकता है। छोटे क्षेत्रों में वायुयान का उपयोग न कर पुरातत्वविदों ने चित्र लेने में गुब्बारों का उपयोग किया है। गुब्बारे में केमरा लटका कर डोरे के सहारे गुब्बारे को ऊपर भेज देते हैं फिर बिजली के तार से केमरे का बटन दबा कर चित्र ले लेते हैं।

कभी-कभी अकस्मात ही प्राचीन स्थानों का पता लग जाता है। अभी कुछ ही वर्ष पहले काशी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्मों के विस्तार करने की आवश्यकता हुई, तब ठेकेदारों ने गंगा के किनारे खड़े कुछ टीलों से मिट्टी लाने की व्यवस्था की। मिट्टी के लिए जो खुदाई की गयी तो वहाँ पुरातत्व की दृष्टि से बड़े महत्त्व का स्थान प्रकट हुआ और बाद में वहाँ विस्तृत ढंग पर पुरातत्व विभाग ने खुदाई करायी और गुप्तकालीन काशी के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ा। इसी प्रकार बंगाल के एक स्थान पर सेना विभाग की ओर से खुदाई हो रही थी तो बहुत सी पुरातात्विक महत्त्व की बातें सामने आयीं।

पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व के स्थान इस प्रकार जाने जाते हैं। इन्हें हम प्राचीन स्थान की खोज के कुछ साधन अवश्य कह सकते हैं पर सच बात तो यह है कि पुरातत्वविद् का कार्य अन्वीक्षण पर ही अधिक निर्भर करता है। उसको छोटी बड़ी प्रत्येक वस्तु पर ध्यान रखना पड़ता है। एक बार सर लियोनर्ड ऊले उत्तरी सीरिया के कर्शमिश नामक स्थान में अन्वेषण कार्य कर रहे थे। उस समय तक वहाँ उन्हें कोई समाधि प्राप्त नहीं हुई थी। एक दिन अचानक आप अपने तुर्की सहकर्मी फाऊद बेग से कह बैठे कि आज मैं एक समाधिस्थल खोदने जा रहा हूँ। उसे यह सुन कर आश्चर्य हुआ। वे उसे उस प्राचीन नगर के दुर्ग के बाहर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नदी के किनारे एक जुते हुए खेत के पास ले गये, जो उस समय परती पड़ा हुआ था। वहाँ बिखरे हुए मिट्टी के टीकरों को दिखा कर बोले कि ये समाधिभूमि को व्यक्त करते हैं और लगे पत्थरों को जमा कर अलग-अलग समाधियों को चिह्नित करते हैं। फाउदबेग अविश्वासपूर्वक हँस पड़े और उनकी बातों का मजाक उड़ाने लगे। अन्ततः दोनों में बाजी लगी कि जहाँ ऊले ने पत्थर रखे हैं वहीं समाधियाँ हैं। खुदाई होने पर बेचारे फाऊद बेग बाजी हार गये। वे एक मास तक समझ ही न सके कि बात क्या थी जिससे ऊले ने ताड़ लिया कि वहाँ समाधियाँ हैं। बात कुछ नहीं थी, वह ऊले की कल्पना मात्र थी। नदी का किनारा बहुत ही कड़े किस्म का पथरीला था, उसके ऊपर पड़ी मिट्टी की तह बहुत ही छिछली थी और अरबी हल से जुते हुए होने के कारण मिट्टी की खुदाई केवल तीन इंच की गहराई तक हुई थी। परती खेत होने के कारण उस पर जो कुछ जमा था, घना न था और उसकी जड़ें भी गहराई तक न गयी थीं; किन्तु बीच-बीच में कुछ ऐसी घास जमी हुई थीं जिनकी जड़ें काफी गहरी गयी हुई थीं। यदि कोई उसे ध्यानपूर्वक देखता तो उसे यह स्पष्ट जान पड़ता कि कहीं-कहीं तो घास का अकेले ही एक पौधा है पर अधिकांश चार-चार पाँच-पाँच पौधों के गुच्छों के रूप में घास हैं और ऐसे गुच्छों का विस्तार कहीं भी छः फुट से अधिक नहीं है। इस अवस्था को देख कर कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह कल्पना कर सकता था कि किसी समय वहाँ की पथरीली भूमि गहराई तक तोड़ी गयी रही होगी। टूटी हुई भूमि में ही इस प्रकार के घास का जमना सम्भव था। घास के प्रत्येक गुच्छे के विस्तार की लम्बाई छः फुट होने से यह कल्पना की जा सकती है कि उसकी खुदाई समाधि के लिए की गयी होगी। ऊले का कथन बस इसी अनुमान पर आश्रित था। उनके इस अनुमान को बिखरे हुए टीकारों से बल मिला। उन्होंने सोचा कि सम्भव है वे टीकरे कम गहरे समाधियों के चिह्न हों अथवा समाधि-पूजा के पात्रों के अवशेष हों। इसी कल्पना के सहारे उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी बात कही जो सही निकली और वे बाजी मार ले गये।

कभी-कभी पुरातत्वविद् को कोरे अनुमान का ही सहारा लेना पड़ता है। तूताखामन की समाधि का पता इसी प्रकार लगा। थेव की घाटी में मिस्र के शासकों के १८वें वंश के दो को छोड़ कर अन्य सभी फिराऊनों की समाधियों का पता लग चुका था। वहाँ उस वंश की समाधिभूमि थी अतः यह आशा करना स्वाभाविक था कि अन्य दो की समाधियाँ भी वहीं होंगी। इसी विश्वास के सहारे लार्ड करनारवन ने उस घाटी की एक सिरे से खुदाई आरम्भ की और अन्ततोगत्वा चट्टानों के काटने से निकले हजारों टन पत्थरों से गह्वरों के भरने के बाद, उन्हें अपनी खोज में सफलता मिली।

इस प्रकार किसी भी पुरातत्वविद् की सफलता बहुत कुछ युक्तिपूर्ण अनुमानों के सहारे धैर्यपूर्वक कार्य करने पर ही निर्भर करती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

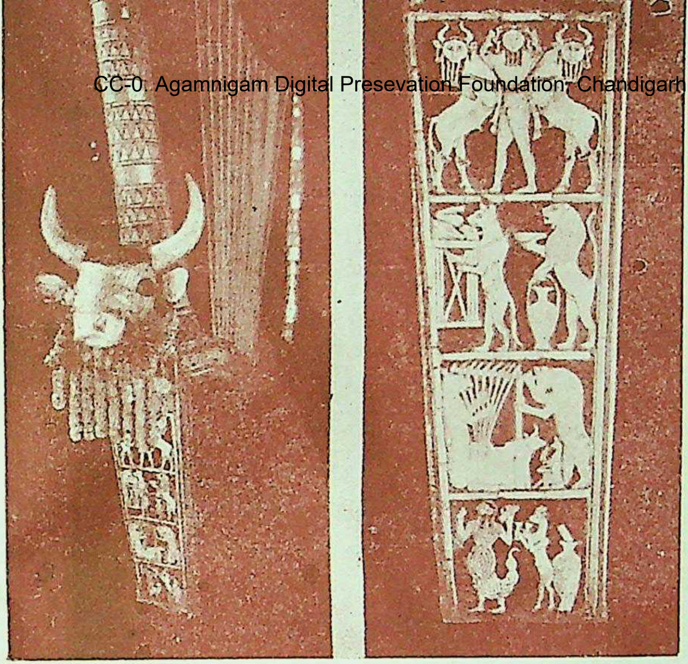

उर की समाधि भूमि में विनष्ट वृषभ मुखहार्य जिसे पुरातत्वविदों पेरिस प्लास्टर के सहारे संरक्षित किया है। (पृष्ठ ६६)
[फिलयडेल्फिया विश्वविद्यालय संग्रहालय से]

थेब की घाटी जहाँ ततन खमन की समाधि थी (पृष्ठ ३०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

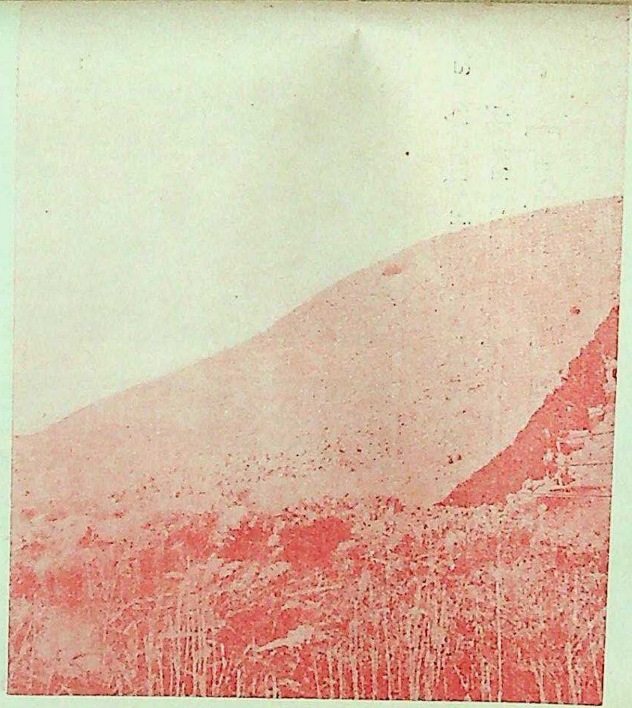

विभिन्न काल के स्तरों के ज्ञान के लिए टीले के एक भाग की सीढ़ीनुमा खुदाई (पृष्ठ ४०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय अध्याय

खुदाई

पिछले अध्याय में हम कह चुके हैं कि पुरातत्वविद् का कार्य मानव-इतिहास की खोज करना और उसकी दिशागति को व्यक्त करना है। इस कार्य का व्यवहारिक रूप कुछ पेचीदा सा है। पुरातत्वविद् को दो ऐसी बातों को सामने रखना पड़ता है जिनका सम्मिलित स्वार्थ होने पर भी लक्ष्य एक नहीं कहा जा सकता। एक ओर तो उसे अपने अन्वेषण का वैज्ञानिक आलेखन करना पड़ता है और दूसरी ओर अन्वेषण में प्राप्त वस्तुओं का संरक्षण।

पहले हम यह भी कह चुके हैं कि ऐतिहासिक ज्ञान, प्राप्त वस्तु की अपेक्षा उसके प्राप्त होने की अवस्था एवं परिस्थिति से ही अधिक प्राप्त होता है। इस दृष्टि से अच्छी से अच्छी और अनोखी से अनोखी वस्तु का महत्त्व उसी समय समाप्त हो जाता है, जब वह अपने सारे ऐतिहासिक महत्त्व का परिचय करा चुकता हैं। यदि किसी कारण कोई संग्रहालय नष्ट हो जाय तो कला की दृष्टि से महान् क्षति भले ही कही जाय, पर पुरातत्व की दृष्टि से वह हानि नगण्य ही कही जायेगी; क्योंकि उस संग्रहालय में संग्रहीत और संरक्षित वस्तुओं के ऐतिहासिक महत्त्व का आलेखन हो चुका होगा। किन्तु इस कथन का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि आलेखन के पश्चात् खुदाई में मिली वस्तुएं निरर्थक सी हो जाती हैं। संग्रह की दृष्टि से उनका अपना एक विशेष महत्त्व है। ज्ञान की वृद्धि में प्रत्यक्ष साधन अधिक सहायक होते हैं। इस दृष्टि से संग्रहालय में संरक्षित वस्तुओं का महत्त्व होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरातत्वविद् को ये दोनों काम एक साथ करना पड़ता है। एक ओर तो उसे आलेखन के प्रति सतर्क रहना पड़ता है, दूसरी ओर वह संरक्षण की भी उपेक्षा नहीं कर सकता। इस प्रकार पुरातत्वविद् का काम बड़े धैर्य और परिश्रम का है। उसके कार्य की प्रगति अत्यन्त मन्द होती है और उसमें समय बहुत लगता है।

पुरातत्वान्वेषण में खुदाई ही एक मात्र प्रधान कार्य नहीं है। यदि खुदाई में किसी प्रकार का अभिलेख प्राप्त हो तो उसके पढ़ने का भी ज्ञान आवश्यक है ताकि तत्काल पढ़ कर उसका अभिप्राय मालूम हो सके और जो बात मालूम हो उसका लाभ खुदाई में उठाया जा सके। अन्वेषण में स्थल के माप की भी आवश्कता होती है। खुदाई में मिले भवनों का नकशा तैयार करना होता है। ये सारे कार्य कोई भी पुरातत्वविद् स्वयं कर तो सकता है किन्तु उसके कार्यों की दिशाएं इतनी बिखरी हुई होती हैं कि वह उन्हें अकेला पूरा नहीं कर सकता।

किसी पुरातात्विक महत्त्व के स्थान की खुदाई करने से पूर्व सदैव इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि पुरातात्विक खुदाई एक प्रकार का नष्टीकरण है। पुरातत्वविद् को किसी स्तर के भवन की खुदाई करने के निमित्त ऊपर स्थित दो या तीन परवर्ती वास्तु-चिह्नों को हटाना पड़ सकता है; तभी मनोच्छित स्तर के भित्ति-अवशेष देखे जा सकते हैं। ऐसी अवस्था में यदि हवा के झोंके से बालू या मिट्टी उस साफ किये हुए स्थान को ढक ले, तो दुबारा उसकी सफाई तो की जा सकती है पर वे सारे पुरातात्विक प्रमाण जो फर्श पर वस्तुओं की अवस्था, लकड़ी के धूलि-चिह्नों अथवा बिखरे ईंटों के रूप में प्राप्त थे, नष्ट होकर सदैव के लिए अलभ्य हो जाते हैं। इसी प्रकार जब किसी समाधि की खुदाई होती है तो वहाँ जो कुछ भी शेष रहता है, वह एक गढ़ा मात्र होता है और उसके भीतर की वस्तुएं संग्रह मात्र होती हैं। यदि पुरातत्वविद् उसकी प्रत्येक वस्तु की अवस्था का यथाक्रम विवरण न तैयार कर सके तो उसका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महत्त्व सदा के लिए लुप्त हो जायेगा। ऐसी अवस्था में यदि किसी खुदाई का विवरण वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण नहीं है तो उसका अर्थ पुरातत्वविज्ञान को धोखा देना होगा। उससे अच्छा तो यह है कि वह खोदा ही न जाय। इसलिए इस बड़ी जिम्मेदारी को देखते हुए खुदाई अथवा अन्वेषण आरम्भ करने से पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि अन्वेषण के सफल संचालन के लिए पर्याप्त साधन है या नहीं।

छोटे मोटे अन्वेषण-स्थलों की खुदाई का कार्य एक आध दर्जन व्यक्तियों से किया जा सकता है। यदि उन आदमियों में से कुछ ऐसे व्यक्ति हों जो पुरातत्व में रुचि रखते हों तो वे कोरे मजदूरों की अपेक्षा अधिक उपयोगी हो सकते हैं। ऐसे लोगों की देख-भाल की कम आवश्यकता होती है। ऐसी अवस्था में एक ही व्यक्ति अन्वेषण की व्यवस्था एवं संचालन कर सकता है; किन्तु विशाल क्षेत्र के अन्वेषण में यह बात लागू नहीं की जा सकती। वहाँ तो मजदूरों के विशाल समूह की आवश्यकता होती है। समय, धन और साधन का ध्यान रखते हुए श्रमिकों का अधिक से अधिक उपयोग करना पुरातत्वान्वेषण के लिए परमावश्यक है। श्रमिकों की संख्या निश्चित नहीं की जा सकती किन्तु इतना तो है ही कि अन्वेषक दल के विशेषज्ञ जितने व्यक्तियों का नियन्त्रण सुगमता से कर सकें उतने ही मजदूरों का उपयोग वांछनीय होता है।

खुदाई का कार्य आरम्भ होने पर मजदूरों को छोटे-छोटे समूहों में बांट दिया जाता है। प्रत्येक समूह में एक खनक—मिट्टी खोदने वाला, एक मिट्टी उठाने वाला और तीन चार मिट्टी ढोने वाले होते हैं। इनमें खनक का चुनाव उसकी योग्यता, अनुभव और बुद्धि के अनुसार किया जाता है। पहले किसी खुदाई में काम कर चुकने वाला व्यक्ति इस कार्य के लिए विशेष उपयोगी होता है। वही अपने समूह का नेता होता है। इस आदमी का काम भूमि खोदना होता है, इसलिए वही मिट्टी से निकली वस्तुएं प्राप्त करता है, इस प्रकार उसका कार्य गुरुतर और उत्तरदायित्वपूर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता है। उसको बराबर यह ध्यान रखना पड़ता है कि जो भी वस्तु मिट्टी में से निकले वह टूटने-फूटने न पाये और उसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचे। दूसरे व्यक्ति का काम मिट्टी को टोकरी में उठा कर ढोने वाले को देना होता है। इसलिए उसका यह भी काम है कि वह टोकरी में मिट्टी भरने से पहले यह देख ले कि उसमें कोई चीज खनक की दृष्टि से बच कर तो नहीं चली आयी है। अगर चली आयी है तो उसका संरक्षण उसका कर्तव्य होता है। शेष मिट्टी ढोने वालों का काम तो यन्त्रवत् है। उन्हें मिट्टी एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर फेंकने से मतलब रहता है। इसलिए वे चतुर हों या मूर्ख इससे प्रयोजन नहीं। केवल परिश्रमी होना आवश्यक होता है।

आगे बढ़ने से पहले यह बता देना आवश्यक है कि पुरातत्व की दृष्टि से खुदाई वर्ष के भीतर जब चाहे तब नहीं की जा सकती। जलवायु के अनुसार मौसम अनुकूल होने पर ही खुदाई निर्भर करती है। हमारे देश में सामान्यतः बरसात के बाद खुदाई का कार्य आरम्भ किया जाता है और गर्मी शुरू होने के पूर्व ही समाप्त कर दिया जाता है। इस काल में बरसात समाप्त होगया होता है जिसके कारण ऊपर के सतह से काफी मिट्टी बह गयी होती है और छोटी-मोटी चीजें, जिनसे पुरातात्विक महत्त्व का संकेत मिलता है, ऊपर आगयी होती हैं। दूसरे मिट्टी नरम होगयी रहती है जिससे खुदाई में आसानी होती है और श्रम कम लगता है। इस समय धूप भी कड़ी नहीं होती जिसके कारण खुदाई का काम सारे दिन किया जा सकता है।

खुदाई के लिए सारी व्यवस्था कर लेने के बाद अन्वेषक का पहला काम, यदि उस स्थान पर पहले कोई अन्वेषण कार्य नहीं हुआ है अथवा उस स्थान के सम्बन्ध में पुरातत्व सम्बन्धी कोई बात पहले से मालूम नहीं है तो, उस भूमि के धरातल का अध्ययन होता है जिसकी कि खुदाई करनी है। यदि अन्वेषणीय स्थान बहुत विस्तृत हुआ तो पुरातत्वविद् किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोपोटामिया से प्राप्त मिट्टी का एक लिखित फलक (पृष्ठ ६६)
[शिकागो विश्वविद्यालय की प्राच्यशाला से]

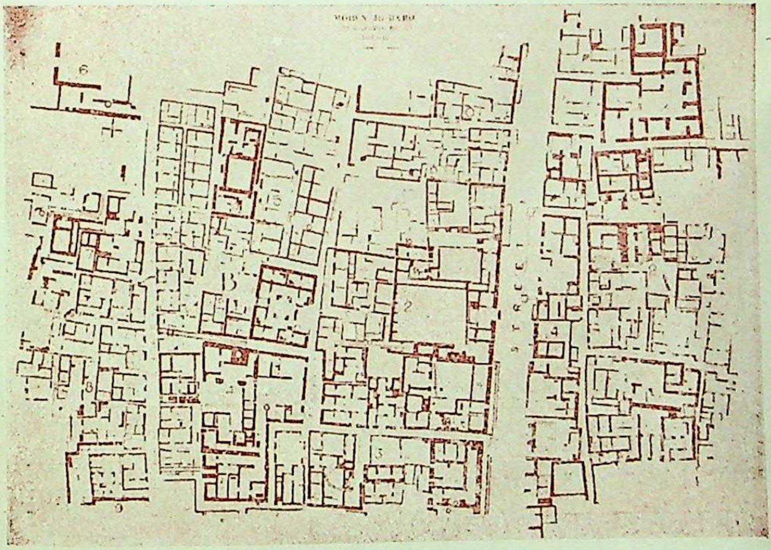

खुदाई में प्राप्त मोंहें-जो नगर का एक भाग (पृष्ठ ३५)
[भारतीय-पुरातत्व बिभाग से]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

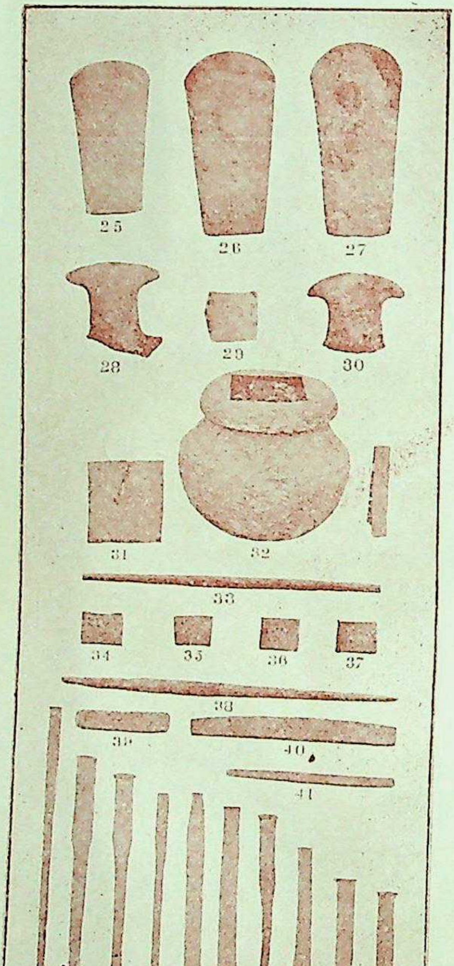

ताम्रयुग के कुछ शस्त्रास्त्र (पृष्ट ५४)
[भारतीय पुरातत्व विभाग से]

परखम से प्राप्त मूर्ति (पृष्ट ६६)
[भारतीय पुरातत्व विभाग से]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक भाग को अपने कार्य का केन्द्र निश्चित करता है। इस निर्वाचन के लिए वह किसी न किसी महत्त्वपूर्ण संकेत का सहारा लेता है। इन संकेतों की कुछ चर्चा हम अन्यत्र कर चुके हैं। उन्हीं या उसी प्रकार के अन्य संकेतों के आधार पर वह अपना कार्य-केन्द्र निश्चित करता है।

पुरातत्वविद् किसी स्थान के केन्द्र का निर्वाचन किसी संकेत के आधार पर करे अथवा कोरे अनुमान के आधार पर, उसके कार्य आरम्भ करने की प्रणाली एक सी होती है। वह अपना कार्य खाई खोदने के रूप में आरम्भ करता है। वह पहले टीले के धरातल पर लम्बाई अथवा चौड़ाई में कोई स्थान निश्चित करता है और उसी स्थान की सीध में वह खुदाई आरम्भ करता है। वह अपने कार्य-क्षेत्र को किसी निश्चित माप के वर्गों में बाँट देता है और प्रत्येक वर्ग में मजदूरों का एक दल खुदाई का काम आरम्भ करता है। थोड़ी खुदाई के बाद ही कुछ गहराई पर दीवारों के टुकड़े दिखाई देने लगते हैं। अब पुरातात्विद् के सामने यह निश्चय करने का प्रश्न उपस्थित होता है कि वे असम्बद्ध दीवारें एक ही काल की हैं अथवा विभिन्न काल की। यदि दीवारें विभिन्न काल की ठहरीं, जैसा कि सामान्यत: अधिक ऊँचे एवं ढालू टीलों में पाया जाता है, तो पुरातत्वविद् अपना ध्यान वास्तु के नवीनतम स्तर पर केन्द्रित कर खुदाई सीमित कर देता है। ऐसा न करने से एक साथ दो स्तरों पर दो कालों की पायी जाने वाली चीजों का अलग-अलग वर्गीकरण करने की समस्या जटिल हो जाती है और यदि किसी वस्तु का सम्बन्ध ठीक-ठीक स्तर के अनुसार आँका न जा सका तो काल-निर्णय के प्रमाणों का कोई मूल्य नहीं रह जाता। काल-निर्णय पुरातत्व का एक मुख्य उद्देश्य होता है, इसलिए ज्यों ही भवनों के अवशेष मिलने लगते हैं, गहराई की ओर खुदाई रोक कर दीवारों के सहारे दाईं-बाईं ओर खुदाई की जाने लगती है और दीवारों के सहारे आगे की ओर खुदाई की जाती है। 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' के सिद्धान्त को लेकर काम होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालुकामय प्रदेशों, यथा—मिस्र आदि में खुदाई का काम अधिक सुगम है। बालू के नीचे छिपे मिट्टी ईंट अथवा पत्थर के बने वास्तु के भग्नावशेषों को बालू के बीच से सरलता से अलग किया जा सकता है। किन्तु चिकनी मिट्टी में दबे मिट्टी और ईंटों के बने भवनों को खोद निकालने में तनिक कठिनाई होती है। ये भवन अपने ही गिरे मलबों के नीचे दबे होते हैं; खड़ी दीवारों और गिरी ईंटों में अन्तर करने के लिए विशेष चातुरी की आवश्यकता होती है। एक बार मिस्र के एक पुरातत्वविद् एक ऐसे ही भग्नावशेष की खुदाई कर रहे थे। जीवन में पहली बार उन्होंने इस ढंग की खुदाई अपने हाथ में ली थी। ईंटों की एक पूरी दीवार को जो लगभग छः फुट ऊँची रही होगी खुदवा डाला, परिणाम यह हुआ कि पत्थर के चौखटों के सिवा उनके हाथ कुछ भी नहीं लगा।

कभी-कभी पत्थर के बने भवनों के अवशेषों का भी पता जल्दी नहीं लगता। यदि भवन का निर्माण पत्थर के बेडौल टुकड़ों और मिट्टी के गारे से हुआ हो, तो मिट्टी के बह और टुकड़ों के खिसक जाने से बने ढेर में दीवारों का पता लगाना सुगम नहीं है। यदि दीवार का बाहरी भाग पत्थर के सुडौल टुकड़ों का भी रहा हो तो भी ऐसा हो सकता है कि पीछे आने वाले लोग उसे नये भवनों के बनाने के लिए उठा ले गये हों। ऐसी अवस्था में वास्तु के अवशेष का रूप शायद ही वास्तु के अनुरूप रह जाय।

सबसे अधिक योग्यता की आवश्यकता उन दीवारों की खुदाई के लिए होती है जो एक दम मिट्टी के बने होते हैं, और मलबे के नीचे दब कर भूमि से अभिन्न बन जाते हैं। ऐसी अवस्था में पुरातत्वविद् को अपने विवेक से आँखों के सहारे काम करना पड़ता है। साधारणतया दीवार वाली मिट्टी में घास भूसा अथवा ईंटों और टीकरों के नन्हें-नन्हें टुकड़े अधिक होते हैं, जिसके कारण दीवार वाली मिट्टी के रंग में हलका सा परिवर्तन हो जाता है। इससे दीवार की मिट्टी और भूमि की मिट्टी में अन्तर करना अभ्यस्त आँखों के लिए कठिन नहीं होता। ऊपर की मिट्टी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हटाये जाने के बाद, नीचे की मिट्टी में जो नमी रहती है वह जब सूख जाती है तो उस समय भूमि और दीवार की मिट्टी के रंग में स्पष्ट अन्तर ज्ञात होने लगता है। फिर भी ऐसी भूल होना असम्भव नहीं होता कि दीवार खोद डाली जाय अथवा दीवार के भ्रम में एक नयी दीवार खड़ी कर दी जाय।

खुदाई में दीवार मिलने के पश्चात् दीवार के सहारे खुदाई करता हुआ प्रत्येक खनक समूह एक-एक दीवार के बगल से जगह बनाता आगे बढ़ता है और उनके पीछे दूसरा दल गहरी खुदाई कर फर्श का पता लगाता है और बाकी लोग कमरों की सफाई की व्यवस्था करते हैं। जब फर्श का, चाहे वह मिट्टी का हो या ईंट का अथवा किसी अन्य चीज़ का, पता लग जाता है तो गहराई की खुदाई का काम तत्काल बन्द कर दिया जाता है। दरवाजों के दीहलों के सहारे फर्श का अनुमान सरलता से हो जाता है। यदि किसी प्रकार फर्श का स्पष्ट पता नहीं लग सका, तो भी उस गहराई पर खुदाई बन्द कर दी जाती है, जहाँ पर फर्श होने की सम्भावना हो सकती है, अर्थात् नींव से कुछ ऊपर। ऐसा करने का कारण स्पष्ट है। फर्श की सतह पर मिलने वाली चीज़ें निश्चित रूप से भवन के समकालीन होती हैं अथवा उसके बाद की और फर्श के सतह से नीचे मिलने वाली चीजें उसके निर्माण से पूर्व की। भवन-निर्माण के लिए जमीन समतल करते समय ये चीजें सुरक्षित रूप से दब गयी रहती हैं। अब यह पुरातत्वविद् का काम है कि वह पूर्ववर्ती और परवर्ती वस्तुओं को अलग कर उनके महत्त्व पर विचार करें। इसलिए पहले भवन के ऊपरी सतह की सफाई की जाती है, फिर उसका मानचित्र तैयार किया जाता है और उस सतह पर मिलने वाली सारी चीजों का व्यवस्थित ढंग से आलेखन किया जाता है। ऐसा करने में बर्तनों पर विशेष ध्यान रखा जाता है। जब एक स्तर के सम्बन्ध में समस्त उपयोगी बातें मालूम हो जाती हैं तब उस स्तर को नष्ट कर उसके नीचे के स्तर की खुदाई की जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये सारी बातें लिखने या पढ़ने में जितनी सुगम जान पड़ती हैं, वस्तुत: व्यवहारिक रूप में उतनी सुगम नहीं हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक भवन नष्ट होकर दब गया किन्तु उसकी दीवारों का कुछ अंश भूमि के ऊपर अपने सुरक्षित रूप में खड़ा रहा। उस भूमि पर नया भवन बनाने वाले ने उसे अपने भवन में सम्मिलित कर लिया और उस अवशिष्ट अंश के ऊपर से ही अपनी दीवार खड़ी की। इस प्रकार किसी भवन की एक ही दीवार दो काल की हो सकती है। सारनाथ में जब गुप्त-कालीन विहार नं० २ की खुदाई की गयी तो उसकी नींव में एक दम भिन्न अलंकरण के भवन का अवशेष मिला। उसी की नींव पर इस विहार का निर्माण हुआ था।

यह भी हो सकता है कि एक भवन अपरिवर्तित रूप में खड़ा रहे और उसके आस-पास के भवन दो-तीन बार बन और बिगड़ जायँ। ऐसी अवस्था में पहले मकान में मिली हुई वस्तुएं पड़ोस के भवन के दो-तीन स्तरों पर मिल सकती हैं। अथवा यह भी हो सकता है कि एक ही काल के दो भवन किसी भूतकालीन घटना के कारण दो भिन्न स्तरों पर बने हों। इस प्रकार की अनेक परिस्थितियाँ काल-निर्णय आदि की समस्याओं को जटिल बना दिया करती हैं। ऐसी समस्याओं को सुलझाने में ही पुरातत्वविद् की कलाकुशलता प्रकट होती है। इसमें उसे तब तक सफलता नहीं मिलती जब तक उसकी कार्यव्यवस्था सुव्यवस्थित न हो।

प्रत्येक स्तर को एक-एक करके खोदने के सामान्य सिद्धान्त के एक-आध अपवाद भी हैं। स्तर-क्रम से खुदाई की गति अत्यन्त मन्द होती है और उसमें समय अधिक लगता है और व्यय भी काफी होता है। अतः जब खुदाई का उद्देश्य उस स्थान की सभ्यता और सामाजिक जीवन का ज्ञान प्राप्त करना न होकर केवल कुछ सूचनाएं प्राप्त करना मात्र होता है तो उस अवस्था में सामान्य सिद्धान्त के विरुद्ध भी काम किया जाता है। अगर यही जानना अभीष्ट हो कि टीले के भीतर कितने काल के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवशेष चिह्न हैं, तो उसके लिए स्तर-क्रम से खुदाई करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। उस अवस्था में टीले के किसी उपयुक्त भाग में ऊपर से नीचे तक गहराई में खुदाई करके स्तरों का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है। अभी जब १९४१ में रामनगर (प्राचीन अहिछत्रा) की खुदाई हो रही थी तो भारतीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन डाइरेक्टर जनरल रावबहादुर काशीनाथ नारायण दीक्षित ने एक कुआँ खुदवाया जिसमें ८५ फुट नीचे पानी मिला। इस कुएँ के भीतर घुस कर वहाँ के प्राचीन नगर के स्तरविभाग का निरीक्षण किया गया। इस खुदाई में उन्हें पचास फुट नीचे तक बर्तनों के टीकरे, कुषाण कालीन मुद्रायें तथा विभिन्न प्रकार की मिट्टी मिली। इस खुदाई की रिपोर्ट अभी प्रकाशित नहीं हुई है, इससे उनके इस परीक्षण का परिणाम विस्तृत रूप से ज्ञात नहीं हो सका है पर उनका यह कार्य सामान्य खुदाई के अपवाद का एक अच्छा उदाहरण है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस भूभाग की खुदाई की जा रही है उसके सम्बन्ध में पुरातात्विक पूर्वज्ञान अत्यल्प है। ऐसी अवस्था में विभिन्न स्तरों पर मिली वस्तुओं का काल निर्णय कठिन होता है क्योंकि पुरातत्व में पूर्व संचित ज्ञान के बल पर ही नये अन्वेषण का मूल्य आँका जाता है। ऐसी अवस्था में भी स्तरक्रम की खुदाई का सहारा नहीं लिया जायेगा। किसी स्तर की आयु का निर्णय उस स्तर पर प्राप्त बर्तनों को देख कर किया जाता है। आरम्भ में फिलिस्तीन में कुछ छिट-फुट खुदाइयाँ हुईं, किन्तु उनके आधार पर बहुत कम पुरातात्विक ज्ञान संचित किया जा सका और वहाँ के इतिहास का कोई क्रम निश्चित नहीं हो सका। सन् १८९० में फ्लिंडर्स पेट्री दक्षिण फिलिस्तीन स्थित लेचिश नामक प्राचीन तीर्थस्थान के खंडहरों को खोदने गये। वहाँ बालू का टीला जमीन से ऊपर की ओर मीनार सरीखा उठा हुआ था। उन्होंने पहले उसके एक भाग में ऊपर से नीचे तक ढाल की ओर एक दरार सी खुदाई। प्रत्येक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खनक को ढाल पर एक निश्चित दूरी तक खोदने का काम दिया और प्रत्येक खनक ने अपने हिस्से की खुदाई सीढ़ीनुमा की। इस प्रकार खनकों ने जो खुदाई की उससे प्राप्त वर्तन एवं अन्य वस्तुयें उन सीढ़ियों के अनुसार अलग-अलग रखी गयीं और उनका आलेखन किया गया। यद्यपि खनकों के कार्यों का विभाजन किसी निश्चित सिद्धान्त पर नहीं हुआ था और न उसमें भूमि के स्तरों का ही कोई वैज्ञानिक ध्यान रखा गया था तथापि संकलन और आलेखन समाप्त हो जाने पर जब तुलनात्मक अध्ययन किया गया तो परिणाम विज्ञान की दृष्टि से खरा उतरा।

अब तक के पुरातात्विक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि ऊँचाई के अन्तर के साथ-साथ विभिन्न स्तरों पर मिलने वाले प्राचीन काल के वर्तनों की रूपरेखा में अन्तर पाया जाता है। सबसे ऊपर के पाँच फुट में अधिकता से मिलने वाली चीजें बाद के पाँच फुट में कम और उसके बाद एक दम लुप्त हो सकती हैं। इसलिए कोई भी व्यक्ति टीले के ऊपर के सात-आठ फुट की खुदाई से यह अनुमान कर सकता है कि अमुक शैली की वस्तु नगर के अन्तिम काल में व्यवहार में आती थी। यदि किसी शैली की वस्तु किसी ऊपर या नीचे के स्तर में नहीं पायी जाती और वह एक-आध स्तर तक ही सीमित रहती है तो अनुमान किया जाता है कि वह किसी एक विशेष काल का चिह्न है जो थोड़े ही दिनों तक रहा। इस प्रकार की वस्तुएं समय निर्धारण की दृष्टि से बहुत महत्त्व की होती हैं क्योंकि उनके आधार पर निश्चित किये गये अनुमान में गलती की कम सम्भावना होती है। लिखित प्रमाण के अभाव में इसी पद्धति के अनुसार क्रमबद्ध विवेचन कर, प्रत्येक शैली के वर्तनों को ऐतिहासिक तथ्यों के साथ उचित स्थान पर रख कर खुदाई में मिली वस्तुओं के आधार पर पेट्री फिलिस्तीन के इतिहास की रूपरेखा खड़ी करने में समर्थ हुए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीय अध्याय

नगर और भवन

नगर अथवा भवन के ध्वंसावशेषों की खुदाई एक लम्बी सी खाई के रूप में आरम्भ की जाती है जो धीरे-धीरे दायें-बायें छोटी-छोटी खाइयों के रूप में, और आगे जाकर नीची दीवारों के बने चौकोर कमरों के रूप में बदलने लगती है और समाधिस्थ भवनों के अवशेषों का रूप निखरने लगता है और उसका महत्त्व सामने आता है।

पुरातत्वविद् को यहीं से अपनी बुद्धि का विशेष प्रयोग करना पड़ता है। उसका पहला काम उस ध्वस्त भवन अथवा नगर का काल निर्धारित करना होता है। अधिकांशतः काल का निर्णय दीवारों के घेरे के बीच मिली वस्तुओं के आधार पर किया जाता है। काल का यह निर्णय बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश की प्राचीन वस्तुओं, विशेषतया बर्तनों के सम्बन्ध में पूर्व संचित ज्ञान कितना है। आस-पास के अन्य ज्ञात स्थानों से सम्बद्ध कालों के ज्ञान के आधार पर ही किसी खुदाई की जाने वाली जगह के किसी स्तर का समय निश्चित किया जाता है। इस प्रकार का काल-निर्णय वर्ष में नहीं होता। कभी-कभी हम उसको काँस्य-युग, परवर्ती काँस्य-युग अथवा आरम्भिक लौह-युग या इसी प्रकार के अन्य नामों से व्यक्त करते हैं। पर यह युग विभाजन सुदूर भूत के लिए ही होता है। सामान्यतः वर्गीकरण में काल का निर्णय शताब्दियों में किया जाता है और उसकी पीठ पर इतिहास के क्रम को स्थिर किया जाता है। इस प्रकार से काल-निर्णय श्री माधवस्वरूप वत्स ने हड़प्पा की खुदाई में किया है। उनका यह कार्य हमारे देश में, अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिशा में सर्वथा नया प्रयास है। हो सकता है कि नई खुदाई होने पर उनके इस काल निर्धारण में कुछ परिवर्तन करना पड़े, पर वह परिवर्तन कालक्रम में न होकर काल की अवधि के सम्बन्ध में होगा।

वर्तनों अथवा उसी प्रकार की अन्य वस्तुओं के आधार पर काल का निर्णय अधिकांशत: उस युग के सम्बन्ध में किया जाता है जिसे हम प्रागैतिहासिक युग कहते हैं। ऐतिहासिक युग के ध्वंसावशेषों के काल का निर्धारण एवं वर्गीकरण सुगमता के साथ राजनीतिक घटनाओं और राजवंशों के सहारे किया जा सकता है। ऐतिहासिक युग के भवनों और नगरों के ध्वंसावशेषों में तो ऐसी बहुत सी सामग्री प्राप्त होती है जो स्वयं-सिद्ध होती है। यथा अभिलेख, मुद्राएं, मुहरें आदि। सारनाथ की खुदाई में कुमारदेवी की एक प्रशस्ति प्राप्त हुई जिससे ज्ञात हुआ कि कुमारदेवी ने धर्मचक्र नाम से जो भवन बनवाया था, उससे पूर्व वहाँ अशोक-कालीन धर्मराजिका स्तूप था जिसमें धर्माशोक ने पूजा प्रचलन किया था। यह प्रशस्ति भवन के मुखद्वार से थोड़ा सा हट कर मिला था। इस प्रशस्ति से न केवल धर्मचक्र भवन के इतिहास पर प्रकाश पड़ा वरन् उससे पहले के इतिहास की बात ज्ञात हुई। इसी प्रकार जयपुर रियासत में बैराट नामक स्थान की खुदाई करते हुए दयाराम साहनी को मौर्यकालीन मुद्राओं के साथ-साथ कुछ ऐसे यवन शासकों की मुद्रायें मिलीं जिनका शासन काल अन्य साधनों से ज्ञात था, अत: उन मुद्राओं के सहारे उस विहार का काल-निर्णय सरलता से किया जा सका। श्रावस्ती की खुदाई में गोविन्दचन्द्र देव का एक अभिलेख मिला जिसमें जेतवन निवासिनी किसी भिक्षुणी को भूमिदान करने का उल्लेख था। इस अभिलेख के सहारे जेतवन का स्थान निश्चित करने में तनिक भी कठिनाई नहीं हुई। भीटा (प्रयाग) की खुदाई के समय भवनों के फर्श पर जो मुहरें मिलीं उनसे पुरातत्वविदों को उन भवनों का समय निर्धारित करने म सहायता मिली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार के स्वयं सिद्ध प्रमाणों के अभाव में भवनों का समय निश्चित करने के लिए अन्य साधनों का उपयोग किया जाता है। प्राचीन गांधार में यवन शासकों से लेकर कुषाण शासकों के शासन काल के बीच विभिन्न समयों में जो भवन बने उनमें अलग-अलग ढंग के पत्थर लगाये गये थे। उदाहरणार्थ, यवन लोगों ने अपने भवनों में पत्थरों के वर्तुलाकार टुकड़े लगाये हैं, पार्थव और शक लोगों के भवनों में अलंकृत और अर्धअलंकृत पत्थर लगे हैं। यही बात तक्षशिला के भवनों को भी देखने से ज्ञात होती है। भवनों की ये विभिन्नताएं किसी को भी अपने काल का ज्ञान करा सकती हैं।

समय-समय पर ईंटों की आकृति और आकार-प्रकार में अन्तर होता रहा है। इस कारण ऐसे भवनों की ईंटों के सहारे, जिनका काल अन्य साधनों से सन्तोषजनक रूप से निर्धारित किया जा चुका है, अन्य भवनों का काल बहुत कुछ अंशों तक निर्धारित किया जा सकता है। यह एक ऐसा साधन है जिसके साधारण अभ्यास मात्र से केवल देख करही किसी भवन का काल निर्णय किया जा सकता है। हमारे देश में मौर्य काल की ईंटें सामान्यतः २१ इंच लम्बी १६ से १८ इंच चौड़ी और ढाई से तीन इंच तक मोटी होती हैं। इसी प्रकार कुषाण कालीन ईंटों का आकार १८ इंच लम्बा १२ से १४ इंच चौड़ा और ढाई से तीन इंच मोटा, गुप्त कालीन ईंटों का आकार उससे छोटा १४ से १६ इंच तक लम्बा १० से १२ इंच तक चौड़ा और दो से ढाई इंच तक मोटा होता है। परवर्ती ईंटें और भी छोटी १० से १२ इंच तक लम्बी, आठ से दस इंच तक चौड़ी और डेढ़ से दो इंच तक मोटी होती हैं। पुरातत्वविद् इन या इस प्रकार के अन्य साधनों का आधार लेकर किसी भवन या नगर का काल निश्चित करता है, पर कभी-कभी वह इसमें असफल भी हो सकता है। पर उसका यह एक प्रधान कर्तव्य है कि वह किसी न किसी आधार के सहारे उसके काल को ठीक-ठीक निर्धारित करे। यदि काल का निश्चय न किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जा सके तो उसके सारे श्रम व्यर्थ हो जायेंगे क्योंकि तब खुदाई से मिली चीजों का महत्त्व आँका न जा सकेगा।

खुदाई में निकले भवन के सम्बन्ध में पुरातत्वविद् की दृष्टि में दूसरा विचारणीय विषय, उस भवन की बनावट होती है। किसी अभिलेख अथवा किसी अन्य साधन से मालूम हो सकता है कि उस भवन का प्रयोजन क्या था अर्थात् वह मन्दिर था, राजप्रासाद था या साधारण जन-आवास था या और कुछ। ध्वंसावशेष की खुदाई का मुख्य उद्देश्य उस स्थान की प्राचीन कालीन अवस्था का ज्ञान प्राप्त करना होता है, इसलिए प्रयोजन ज्ञात हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। हम यह जानना चाहते हैं कि उस काल के उस मन्दिर, राजप्रासाद या जन-आवास का मूल रूप क्या था। इसके जानने के लिए जो साधन हमारे सामने खुदाई से आता है वह गृह-योजना मात्र होती है। उसी पर दृष्टि रख कर पुरातत्वविद् को अन्य वस्तुओं एवं अपने संचित ज्ञान का आधार लेकर उस वास्तु के मूल रूप की कल्पना करनी पड़ती है। इस कार्य में उसे सफलता मिल सके, इसके लिए आवश्यक है कि वह उस भवन के भीतर मिलने वाली छोटी से छोटी निरर्थक प्रतीत होने वाली बातों का भी निरीक्षण, संकलन, आलेखन और संतुलन करे। इस कार्य में वह किसी शिल्पी को अपना सहायक बना सकता है, पर उसके लिए भी आवश्यक है कि वह स्वयं वास्तुकला से परिचित हो। अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए उसे ईंट-पत्थर की दीवारों तथा उसके सहारे कागज पर अंकित गृह-योजना, दोनों पर समान रूप से श्रम करना पड़ता है। कागज पर अंकित गृह-योजना, उन सारी बातों का सार होता है, जो खुदाई में मिलने वाली वस्तुओं के आधार पर जानी जा सकती हैं। उसी के सहारे पुरातत्वविद् अपना कार्य करता है।

अपने लक्ष्य पर पहुँचने के निमित्त पुरातत्वविद् को सबसे पहले यह निश्चय करना होता है कि जो गृह-योजना खोद कर निकाली गयी है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह पूर्ण है या नहीं। सम्भव है कि कोई दीवार एक दम नष्ट हो गयी हो और उसके अस्तित्व का प्रमाण अप्राप्य हो। ऐसी अवस्था में उसको अनुमान की शरण में जाना पड़ सकता है। उसे अपने अनुमान को अन्य साधनों से पुष्ट करने की चेष्टा करनी होगी। यह भी सम्भव है कि उसे खुदाई में दीवारों का जाल सा बिछा मिले। इनमें से कुछ ऐसी दीवारें हो सकती हैं जो परिवर्तन या संवर्धन के निमित्त बनायी गयी हों। भीटा (प्रयाग) की खुदाई में सर जान मार्शल को ऐसी ही समस्या का सामना करना पड़ा था। ऐसी अवस्था में भवन के मूल रूप को समझने के लिए इन दीवारों के ऐतिहासिक महत्त्व को अक्षुण्ण रखते हुए कागज पर अंकित गृह-योजना द्वारा उनका स्पष्टीकरण आवश्यक होगा। सारनाथ की खुदाई में जो प्रधान मंदिर निकला, उसका भग्नावशेष जब सामने आया तो देखा यह गया कि उसका गर्भगृह ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी के आस पास छोटा कर दिया गया था और उसके चारों ओर दो दीवारें उठा दी गयी थीं। अनुसंधान करने पर पता चला कि मूल दीवारों के लिए शिखर का भार सहन करना असम्भव हो रहा था इसलिए उनके सहारे के लिए गर्भगृह छोटा कर दो दीवारें खड़ी कर दी गयी थीं।

यदि गृह-योजना ठीक तरह से तैयार कर ली जाय तो फिर उसके उद्देश्य को समझना बहुत कठिन नहीं होता। जन-निवास, दुर्ग और मन्दिर की भूमियोजना पहचानने में साधारणतया भ्रम नहीं हुआ करता। मोहें-जो-दड़ो काल से लेकर आज तक हमारे देश में मकानों की योजना प्रायः एक सी रही है। चारो ओर कमरा, सामने स्तम्भयुक्त बारामदे और बीच में आंगन। मार्ग दरवाजे और कमरों के देखने से सामान्य योजना का ज्ञान सहज ही हो जाता है। प्रकाश की समस्या पर विचार करते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कमरे के समान दिखाई देने वाला कौन सा भाग आंगन हो सकता है। दीवार की मोटाई देखकर भवन के ऊपरी भाग का आभास मिल सकता है। स्तम्भों का आधार देख कर स्तम्भों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की ऊँचाई का अनुमान और उसी के सहारे भवन की ऊँचाई का अनुमान किया जा सकता है। ध्वंसावशेष में मिले वर्तुलाकार ईंटों को देख कर मिहराब और वर्तुलाकार छतों का ज्ञान होता है।

सर आर्थर ईवांस इसी के सहारे क्रीट के शासक मिन के राजप्रासाद के दुमंजिले होने की बात का पता लगा सके थे। जिस समय उन्होंने खुदाई की, उन्हें जो दीवारें खड़ी मिलीं उनमें पत्थरों की कुछ ही पंक्तियाँ थीं, फिर भी भूमि योजना एवं खुदाई में प्राप्त वस्तुओं के आधार पर मिन शासकों के शानदार भवन की रूपरेखा उन्होंने सामने ला खड़ी की, जिसकी कल्पना प्राप्त वस्तुओं को देखने वाला कोई भी सामान्य व्यक्ति कभी नहीं कर सकता था।

भूमि-योजना के आधार पर किसी भवन के मूल रूप का अनुमान और संरक्षण किस सीमा तक किया जा सकता है, इसका एक अत्यन्त उपयोगी उदाहरण सर ऊले ने ईसा से १४ शताब्दी पूर्व के तेल-अल-अमर्ना (मिस्र) के एक नगर की खुदाई में उपस्थित किया है। इस नगर को अखेन-अतन नामक शासक ने बसाया था। उसका विवरण उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है—"नगर के दक्षिणी किनारे पर हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक बहुत बड़ी चहारदीवारी के भीतर विस्तृत भूमि में पत्थरों के टुकड़े बिखरे हुए थे। उनमें दो स्तम्भों के टूटे अंश, एक दो उत्कीर्ण पत्थर थे। बाकी जो भी पत्थर थे वे उत्कीर्ण पत्थरों के टुकड़े मात्र थे। उनके देखने से यह स्पष्ट प्रकट होता था कि उस भवन के अवशेषों का परवर्ती काल में चूना बनाने में उपयोग किया गया है। उसकी दीवार गिरा कर अलंकरण विकृत कर दिये गये हैं और सामग्री प्रयोग के लिए अन्यत्र उठा ले जायी गयी है। पुरातत्व की दृष्टि से उस स्थान का महत्त्व प्रायः नष्ट हो चुका था फिर भी यह सोचकर कि शायद कोई उपयोगी वस्तु बच रही हो, हमने उसे खोदने का निश्चय किया। पर खोदने पर जो परिणाम सामने आया वह भी निराशाजनक ही था। फर्श के ऊपर वास्तु का भाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केवल छः इंच बचा था। पत्थरों के टुकड़ों के नीचे हमें चौरस आयताकार चूने का फर्श मिला जो लगभग एक फुट मोटा था और रेगिस्तानी बालू के ऊपर नींव को दृढ़ बनाने के लिए बनाया गया था। उसके नीचे कुछ भी नहीं था। ऊपर की अवस्था हम खुदाई के पूर्व देख ही चुके थे। मन्दिर का कोई भी पत्थर अपने स्थान पर नहीं था। इतना ही नहीं उस स्थान पर शायद ही कोई पत्थर बच रहा हो।

"पलस्तर वाली नींव पर दीवार और फर्श के पत्थर जोड़ने के लिए चूने का प्रयोग किया गया था। जो पत्थर उखाड़े गये थे, उनका चूना पलस्तर की फर्श से चिपका रह गया था। चूने के इस अवशेष पर पत्थर की छाप यहाँ तक कि पत्थरों पर लगे छेनियों के निशान भी स्पष्ट रूप से अंकित जान पड़ते थे। यद्यपि वहाँ कोई पत्थर नहीं था तथापि चूने के निशानों के सहारे पत्थरों को आसानी से गिना जा सकता था। उन्हें ध्यानपूर्वक देखने पर अनुमान हुआ कि शायद इन पत्थरों के चिह्नों के सहारे दीवार और फर्श के बीच अन्तर किया जा सके। अस्तु, मजदूरों से उस जगह को अच्छी तरह साफ कराया गया। जब मैं अपने दल के वास्तुकार न्यूटन के साथ उस स्थान का निरीक्षण इस दृष्टि से कर रहा था कि पत्थरों के उन चिह्नों के आधार पर किसी प्रकार गृह-योजना का अनुमान लगाना सम्भव है या नहीं, तब एक विचित्र बात दिखाई पड़ी।

"कहीं-कहीं पत्थर के साथ-साथ चूना भी उखड़ गया था और पलस्तरवाला फर्श अपने चिकने रूप में बचा था। पलस्तर के ऐसे फर्श पर हमें यत्र-तत्र हलकी लाल रेखा सी दिखाई पड़ी जिसके ऊपर दीवाल-वाले चूने का पर्त पड़ा हुआ था। इस रेखा से एक बात अपने आप स्पष्ट हो गयी। पलस्तर वाला फर्श सूख कर जब पक्का हो गया तब राज-गीरों ने वास्तुकार की योजना को कार्यान्वित करने के लिए लाल रंग में सूत डुबा कर प्रत्येक सम्भाव्य दीवार की भूमि पर फैला कर फटक दिया था जिससे उस पर सीधी रेखा इस प्रकार हो गयी है मानो रूलर से खींची

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी हो। ऐसी दो रेखाओं के बीच राजगीरों ने दीवार खड़ी की थी। अब हमें अनुमान लगाने की आवश्यकता न थी। हमारे सामने तो अब मिस्री वास्तुकार द्वारा अंकित मूल योजना ही पलस्तर के फर्श पर मौजूद थी। उसे कागज पर अंकित कर लेने के बाद हम भवन के वाह्य रूप के सम्बन्ध में अनुमान लगाने लगे। स्थान-स्थान पर दीवारों की मोटाई में काफी अन्तर था। पत्थर के अनेक टुकड़ों पर दोनों ओर चित्र उत्कीर्ण थे। स्पष्ट था कि वे दीवार के दोनों पटलों को व्यक्त करते थे। ऐसे पत्थरों की मोटाई में भी भिन्नता थी। इस प्रकार के सारे टुकड़े एकत्र किये गये और नाप के अनुसार भूमि योजना के आधार पर उनका किसी न किसी दीवार से सम्बन्ध स्थापित किया गया।

"अखेन-अतन-कालीन वास्तुकारों के पास अलंकरण के साधन सीमित थे, इस कारण मन्दिरों के दीवारों पर जो दृश्य अंकित किये गये थे, वे प्रायः एक से ही थे और बार-बार दुहराये गये थे। यद्यपि हमारे पास प्रत्येक दीवार के पटल को व्यक्त करने वाले बहुत ही थोड़े टुकड़े थे तथापि उन पर उत्कीर्ण चित्रों के विषयों को पहचान कर, अन्य भवनों पर अंकित सुरक्षित चित्रों के सहारे दीवारों के सारे अलंकरणों को पूरा करना सरल था। स्तम्भों के गोलक, उनके भूमि पर पड़े रहने की अवस्था तथा भूमि योजना से ज्ञात हुआ कि उस भवन में दो तरह के स्तम्भों का प्रयोग हुआ था। हमने उन गोलकों को यथास्थान रखा। मिस्री स्तम्भों की ऊँचाई सामान्यतः व्यास के निश्चित अनुपात में होती है। इस आधार पर हमने उसकी ऊँचाई निर्धारित की और उसी के अनुपात में भवन की ऊँचाई का भी अनुमान किया। कारनीस के कुछ टुकड़ों से हमने छतों की योजना का अनुमान किया और एक उत्कीर्ण धरन के आधार पर मुख्यद्वार का रूप निर्धारित किया। इस प्रकार हम उस मन्दिर के मूल रूप तक पहुँचने में सफल हुए जो एक अज्ञात शैली का था। एक भी पत्थर अपनी सुरक्षित अवस्था में न था वरन् दो तीन को छोड़ कर सब धूल में मिल गये थे फिर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी हम मिस्री कला के एक मूल्यवान सामग्री की रक्षा करने में सफल हो सके। एक अन्य वस्तु ने हमें विशेष सन्तोष प्रदान किया। नींव वाले पलस्तर के फर्श का आकार भवन के आयतन से बड़ा था और उसके चारों ओर दीवारों के बाहर छः-छः इंच की दूरी पर छेद थे जो पलस्तर को पार कर नीचे बालू में धँसे हुए थे। उन्होंने कुछ क्षण तक हमें उलझन में डाल दिया फिर ध्यान पूर्वक खोजने पर हमें एक छेद में नष्ट काष्ट का कुछ चिह्न मिला जिससे सारी बातें साफ हो गयीं। मिस्र के मन्दिरों के चित्रों में सदैव भवन के बगल में ध्वज स्तम्भ और उस स्तम्भ पर फह-राता हुआ पताका दिखाया गया है। ध्वज स्तम्भ के प्रत्यक्ष उदाहरण के रूप में हमें ये गढ़े मिले जो मिस्र के इतिहास में उसके एक मात्र अव-शिष्ट प्रमाण हैं। हम अपने चित्र में इस वस्तु को भी ठीक माप के अनुसार रख सके।" पुरातत्वविद् किस प्रकार अपने प्रयत्नों से हमें पुरातन युग में ले जाकर खड़ा कर सकता है और उसमें उसे किस हद तक सफलता मिल सकती है, इसका यह एक उज्ज्वल उदाहरण है।

हम यह जानते हैं कि किसी भवन की शैली न तो आकस्मिक होती है और न मनमानी; वरन् जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उनका विकास होता है। इसलिए पुरातत्वविद् जब हमारे सम्मुख किसी प्राचीन भवन की रूपरेखा उपस्थित करता है तो उसकी महत्ता केवल इतनी ही नहीं होती कि वह वास्तुकला का इतिहास प्रस्तुत कर रहा है, वरन् वह स्त्री-पुरुषों के जीवन की अवस्था और उनके भावनाओं के व्यक्त करने के साधन को भी उपस्थित करता है। यदि हमें यह ज्ञात न हो कि किसी युग का मनुष्य किस वातावरण में रहता था और उसका किस ढंग का व्यक्तित्व था तो जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण को समझने में हम सर्वथा असमर्थ रहेंगे। मनुष्य के जीवन पर उसके निवासस्थान का क्या प्रभाव पड़ता है, यह बहुत कुछ अंशों में अनुभव नहीं होता, किन्तु इतना तो है ही कि वह हमारी पिछली रूढ़ियों को व्यक्त करता है। इस दृष्टि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से वह हमारे भावों का द्योतक है। जब हम मोंहे-जो-दड़ो के अवशिष्ट भवनों, उसकी सड़कों और वहाँ की व्यवस्था को देखते हैं तो हमें इस बात का अनुभव होने लगता है कि वहाँ के निवासियों में ऐसी आत्मा जाग्रत थी जो शताब्दियों की सभ्यता और कला के वातावरण में पली होगी और उन सब में एक ही प्राण बोल रहे हैं। वहाँ के सारे भवन थोड़े परि-वर्तन के साथ एक ही भूमि योजना को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार जिस बात को साहित्य बताने में असमर्थ होता है और जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते वह हमें पुरातत्व के प्रयत्न से ज्ञात होती है।

कभी-कभी भवनों के प्रकाश में आने के साथ-साथ विगत जीवन का चित्र भी असाधारण रूप से हमारे सामने आ उपस्थित होता है। मिस्र के अल-अमर्ना नामक स्थान में एक गाँव खोद कर निकाला गया। यह गाँव राज्याधिकारियों के कब्र खोदनेवालों के लिए रेगिस्तानी पत्थर काट कर बनाया गया था। जब मिस्र की राजधानी वहाँ से उठ कर थेव वापस चली गयी, तब कब्र खोदने वालों के वहाँ रहने की आवश्यकता भी न रह गयी, फलस्वरूप वह गाँव भी उजड़ गया। इस गाँव के आयताकार परकोटे के बीच छोटे-छोटे घरों की पंक्तियाँ पतली पतली गलियों द्वारा विभक्त थीं। फाटक के पास मुखिया का मकान था। उस मकान को छोड़ कर बाकी सब मकान एक से थे। सामने रसोई घर, पीछे रहने का कमरा, आलमारी आदि। आज के उन्नतिशील औद्योगिक क्षेत्रों के मजदूरों के क्वार्टरों से उसका बहुत कुछ साम्य था। ईसा से १४०० वर्ष पूर्व के मिस्र के सामाजिक जीवन पर यह गाँव एक विशेष प्रकाश डाल रहा था। राजप्रासाद एवं अधिकारियों और मध्यम वर्ग के लोगों के सम्बन्ध में राजधानी के ध्वंसावशेषों से ज्ञान प्राप्त हुआ था, इस ध्वंसाव-शेष से निम्न वर्ग के लोगों के जीवन पर प्रकाश पड़ा। दरवाजे के सामने मिट्टी और पत्थर के बने हुए नाद, उनके बगल में बने हुए चौखूँटे छेद, छेद में धँसा हुआ खूंटा, और खूँटे में बँधी हुई खजूर की रस्सी इस बात को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बता रही थी कि तीन हजार वर्ष पूर्व वहाँ गदहा बँधा करता था। मकान के कच्ची दीवारों पर अप्रौढ़ चित्र अंकित थे जिन्हें मजदूरों ने अपने घर के सजाने के लिए खींच रखे थे अथवा उनके द्वारा उन्होंने अपने अव्यक्त भावों को व्यक्त करने की चेष्टा की थी। फर्श पर बिखरे ताबीजों पर अंकित चित्र मजदूर श्रेणी के लोकप्रिय देवताओं का पता दे रहे थे। बिखरे हुए औजार और खेल के साधन आदि प्रत्येक मजदूर के पेशे और उनके अवकाश के समय के मनोरंजन को बता रहे थे।

एक मकान तो बहुत ही मनोरंजक रूप से अपने मालिक का चरित्र बता रहा था। जिस पंक्ति में वह मकान था, उसके सभी मकानों का द्वार पूरब की ओर खुलता था, केवल वह ही एक ऐसा मकान था जिसका दरवाजा पीछे की ओर था, जिधर अन्य मकानों के दीवार मात्र थे। इस प्रकार की विरोधी अवस्था देख कर अन्वेषक को कौतूहल हुआ और उन्होंने विशेष ध्यान से उसकी परीक्षा की। परीक्षा करने पर पता चला कि उस मकान का द्वार भी पहले अन्य मकानों की तरह ही पूरब की ओर था। बाद में किसी समय वह बन्द कर दिया गया और पीछे की ओर नया दरवाजा बनाया गया। ऐसी अवस्था देखकर स्वाभाविक कल्पना होती है कि उस मकान के स्वामी का अपने पड़ोसियों से झगड़ा रहा होगा और उसे उनसे घृणा रही होगी किन्तु किन्हीं नियमों अथवा परिस्थितियों में बँधे रहने के कारण वह उस मकान को छोड़ न सकता रहा होगा। अतः विवश होकर उसने सामने का दरवाजा बन्द कर लिया और पीछे की ओर दरवाजा खोल कर उस निर्जन गली में सन्तोष की साँस ली होगी।

इस बात को पढ़ कर कोई भी पाठक पूछ सकता है कि तैंतीस शताब्दी पूर्व कुछ मजदूर वैमनस्य भाव से रहते थे, इस ज्ञान का हमारे लिए ऐतिहासिक मूल्य क्या है? यह तो अत्यन्त स्वाभाविक, साधारण तथा निरर्थक सी बात है जो सब जगह और सब काल में होती रहती है। बात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी यही है। हमारे इस उल्लेख करने का तात्पर्य उस घटना को किसी प्रकार का महत्त्व देना नहीं है, वरन् केवल इस बात की ओर संकेत करना है कि मिट्टी के नीचे इस तरह की साधारण से साधारण बात भी दबी पड़ी रहती है और यदि ध्यान दिया जाय तो सरलता से ज्ञात हो सकती है। यदि पुरातत्वविद् अपने आलेखन और निरीक्षण में सतर्क रहे तो उसे इस तरह जीवन की कितनी ही महत्त्वपूर्ण बातें मालूम हो सकती हैं।

* * *

चूने-मिट्टी के मूक साक्षी और छिन्न-भिन्न वस्तुओं से संचित ज्ञान को जीवन के इतिहास से सम्बद्ध करना पुरातत्वविद् का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। उसका यह प्रयत्न किसी भी वंश, राष्ट्र अथवा देश के प्रचलित इतिहास कथा को पुष्ट अथवा विनष्ट कर सकता है। उसमें वह किस प्रकार सफल होता है यह मौखिक रूप से बताना तनिक कठिन है। कदाचित उसका स्पष्टीकरण किसी रूप में इस उदाहरण से हो सके।

जनश्रुति रही है कि गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् बंगाल में अराजकता फैल गयी थी। उस अराजकता का अन्त पाल शासकों ने किया ऐसा उनके अभिलेखों से प्रकट होता है। बोगरा जिले के महाप्रस्थानगढ़ नामक स्थान की खुदाई में दो स्तरों में, एक के ऊपर एक, दो पाल-कालीन मन्दिरों के अवशेष मिले। पूर्व पाल-कालीन मन्दिर के स्तर तक पहुँचने के लिए जब उत्तर पाल-कालीन मन्दिर के अवशेष हटाये गये तब ज्ञात हुआ कि अर्घ-जल को गर्भगृह से बाहर गिराने के लिए जो नाली बनायी गयी थी उसमें गुप्तकालीन एक सुलंकृत स्तम्भ का प्रयोग हुआ है। इससे इस बात का आभास मिला कि पूर्व पाल-कालीन मन्दिर के स्थान पर कोई और भी मन्दिर था जो सम्भवत: गुप्त कालीन रहा होगा। जब गर्भगृह के पथ की सीढ़ियाँ उखाड़ी गयीं तो उसके नीचे गुप्त-कालीन मन्दिर के स्तम्भ, चौखट आदि निकले। इससे इस धारणा की पुष्टि हुई कि जिस समय महाप्रस्थानगढ (प्राचीन पुण्ड्र) में, गुप्त साम्राज्य के पतन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के बाद काश्मीर के यशोवर्धन, मुक्तापीड़, तथा मध्यप्रान्त के शैल आदि के आक्रमण से अराजकता फैल रही थी, उस समय वहाँ कोई गुप्त मन्दिर था जो ध्वस्त हो गया और उसके ध्वंसावशेष पर प्रथम पाल शासकों के समय जब मन्दिर का निर्माण हुआ तो वास्तुकारों ने उस मन्दिर के बनाने में उस गुप्त मन्दिर के सामग्री का उपयोग किया। पश्चात् गुर्जरों की प्रतिद्वन्दिता के कारण पाल साम्राज्य का ह्रास हुआ और जब महिपाल प्रथम ने उसको पुनरुज्जीवित किया तो उसके शासन-काल में या उसके बाद फिर दूसरा मन्दिर बना।

इस उदाहरण में हम देखते हैं कि हमें जो थोड़ी सी बातें ज्ञात थीं उसका समर्थन इन मन्दिरों की खुदाई से हो गया। किन्तु उन ध्वंसावशेषों के सम्बन्ध में, जिनका किसी प्रकार का इतिहास पहले से ज्ञात नहीं होता वहाँ पुरातत्वविद् को अपने अनुमान की शरण लेनी पड़ती है। ऐसी अवस्था में वह जिस निष्कर्ष को पहुँचता है वे अटल या निर्विवाद होते हैं ऐसा तो नहीं कहा जा सकता किन्तु यदि उसने अपनी तर्क बुद्धि का उचित उपयोग किया है, जैसा कि हम पहले बता आये हैं, तो निस्सन्देह वह इतिहास की उत्तम सामग्री उपस्थित कर सकता है।

मान लीजिये पुरातत्वविद् एक ऐसे टीले की खुदाई कर रहा है जिसमें भवनों के अवशेष एक दूसरे के ऊपर एक अनिश्चित स्तर पर स्थित हैं, किन्तु सारे भवन एक ही काल या सभ्यता युग के हैं जिसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है। ऐसी अवस्था में खुदाई में उसे ऐसी वस्तुएं तो मिल जाती हैं जिनसे उस स्थान के निवासियों के जीवन पर प्रकाश पड़ सके; किन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि उनके द्वारा वह ऐतिहासिक काल तक किस प्रकार पहुँच सकता है।

इसके लिए पुरातत्वविद् को प्राचीन साहित्य में उल्लिखित सामग्री पर दृष्टि डालना पड़ता है। इसमें तुलनात्मक पुरातत्व का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। मान लीजिये नीचे का स्तर उत्तर प्रस्तर-युग का है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और वहाँ पत्थर के हथियारों और हाथ के बने खुरदरे मिट्टी के वर्तनों के अतिरिक्त बहुत कम सामग्री मिलती है; लेकिन जो सामग्री मिलती है उनका अन्य स्थानों में प्राप्त वस्तुओं से बहुत कुछ साम्य जान पड़ता है। इस आधार पर पुरातत्वविद् यह निश्चय कर सकता है उस स्थान के निवासी सभ्यता की किस शाखा के थे।

ज्यों-ज्यों स्तर ऊँचा होता जायेगा, पत्थर के स्थान पर धातु की वस्तुएं मिलेंगी। हो सकता है किसी स्तर पर ताँबे के ऐसे औजार और हथियार दिखाई पड़ें जिनका स्वरूप नौसिखुओं द्वारा प्रयुक्त होने वाले हथियारों सरीखा न होकर निपुण शिल्पियों द्वारा बनाये गये हथियारों सरीखा हो। इनके साथ ही जब किसी दूसरे देश अथवा स्थान पर दृष्टि डाला जाता है तो वहाँ उसी ढंग के हथियार और औजार दिखाई तो पड़ते हैं किन्तु वहाँ उनका विकास किसी साधारण वस्तु या पत्थर से हुआ दिखाई पड़ता है। ऐसी अवस्था में पुरातत्वविद् इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसे जो चीजें खुदाई में मिली हैं वे स्थानीय नहीं हैं वरन् बाहर से लायी गयी हैं। धातु-सामग्री के स्थानीय अथवा विदेशी होने का निर्णय वहाँ पाये जाने वाले मिट्टी के वर्तनों की सहायता से भी किया जा सकता है। जहाँ पत्थर का स्थान धातु लेता दिखाई पड़ता है, वहाँ भी मिट्टी के बर्तनों में पूर्ववर्ती बर्तनों का प्रभाव पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है। बर्तनों का निर्माण एक स्थानीय कला है। इसलिए यदि उन पर किसी प्रकार का बाह्य प्रभाव नहीं ज़ान पड़ता तो सुगमता से कहा जा सकता है कि वहाँ के निवासियों के जीवन पर कोई बाहरी प्रभाव नहीं पड़ा था और वे अक्षुण्ण रूप से वहाँ बने हुए थे और धातु का परिचय उन्हें शान्तिमय उपायों अथवा व्यापार के द्वारा हुआ था।

यदि पुरातत्वविद् खुदाई करते-करते किसी ऐसे स्तर पर पहुँचता है जहाँ उसे राख बिखरा मिलता है तो समझ लीजिये वहाँ किसी समय कोई दुर्घटना हुई थी। यदि राख थोड़े ही क्षेत्र में फैली हुई है या उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मात्रा बहुत ही कम है तो समझा जा सकता है कि आग लगने की कोई छोटी-मोटी घटना हुई होगी। किन्तु यदि अधिक भाग में राख बिखरी हुई है और दीवारों पर जलने के चिह्न दिखाई पड़ते हैं तो उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वह नगर जल कर नष्ट हुआ है। अब यदि राख के ऊपर वाले स्तर में नये ढंग के बर्तन मिलते हैं और उनका कोई भी सम्बन्ध राख के नीचे वाले स्तर पर मिलने वाले बर्तनों के साथ नहीं जान पड़ता तो उसका सीधा-सादा अर्थ उस स्थान के निवासियों का विनाश तो है ही, साथ ही यह भी है कि उस पर किसी विदेशी जाति ने विजय प्राप्त की थी। अब यदि इस नये ढंग के बर्तनों का सादृश्य अन्यत्र कहीं मिल सके तो सुगमता से उस विजेता जाति को पहचाना जा सकता है। यदि किसी स्तर पर आग की राख के स्थान पर हवा से बिखरे बालू अथवा बरसात में बह कर आयी मिट्टी और मकान के गिरे मलबों से बना चिकना स्तर दिखाई पड़े तो उसका स्पष्ट अर्थ यह होगा कि वह स्थान कुछ काल के लिए जन शून्य हो गया था और कुछ काल के बाद वहाँ नये लोग आकर बसे। इस प्रकार के स्थान का सुन्दर उदाहरण श्रीअर्नेट मैके को सिन्ध के नवाबशाह जिले में चन्हु-दड़ो नामक स्थान में मिला था। वहाँ पर उन्हें एक ही स्थान पर पाँच कालों के अवशेष मिले। उनके बर्तनों के देखने से जान पड़ता है कि वहाँ की सबसे प्राचीन सभ्यता वैसी ही थी जैसी कि मोहें-जो-दड़ो और हड़प्पा की। अर्थात् ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व वहाँ जो लोग बसते थे वे मोहें-जो-दड़ो और हड़प्पा वाले ही लोग थे। उसके बाद ऊपर जो स्तर प्राप्त हुआ उसमें लाल रंग के बर्तन मिले जिनकी सजावट काले रंग से की गयी थी। इस ढंग के बर्तन लरकाना जिले के झूकर नामक स्थान में पाये गये थे। इससे अनुमान होता है कि उस स्तर के निवासी झूकर निवासियों के परिवार के थे। इनका काल १७०० वर्ष ईसा पूर्व अनुमान किया जाता है। इस स्तर के ऊपर बालू और मिट्टी फैली हुई थी जो इस बात का द्योतक था कि उसका विनाश जल-प्लावन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से हुआ था। इस स्तर के ऊपर पुनः मोहें-जो-दड़ो के से बर्तन मिले। जिनसे जान जड़ता है कि वहाँ के निवासी इस स्थान पर दुबारा आकर बसे थे। इन लोगों के बाद एक अन्य जाति के लोगों के यहाँ आकर बसने के चिह्न ऊपर वाले स्तर में पाये गये हैं। इन लोगों के बर्तनों का रंग परा-काला है और उनकी सभ्यता बहुत पिछड़ी हुई थी; उनके निवास बाँस फूस के बने हुए थे। उनके बिखरे हुए राखों से जान पड़ता है कि उनके विनाश का कारण कोई अग्निकांड था। हो सकता है कि उन्हें किसी अन्य जाति ने पराजित किया हो या अग्निकांड का कोई और कारण रहा हो। इन लोगों की सभ्यता का नाम मजूमदार ने झाँगुर रखा है क्योंकि उस ढंग के बर्तन उन्हें झाँगुर नामक स्थान में पहले पहल मिले थे। ताम्रयुगीन इन चार काल की सभ्यता चिह्न के बाद सबसे ऊपरी स्तर में मुसलिम काल के क़ब्र पाये गये हैं। इससे जान पड़ता है कि वह स्थान एक दीर्घ काल तक एक दम उजाड़ पड़ा रहा।

कभी-कभी किसी वस्तु की शृंखला अन्यत्र मिलने पर भी उसका तारतम्य ढूँढ़ना पड़ता है। मिस्र में प्रथम राज वंश काल में (३३०० ई० पू०) बेलनाकार मुहरों का प्रयोग पाया गया है। ये मुहरें पत्थर या सीप की बनी हुई बेलन के आकार की हैं और उन पर हलके अभिलेख खुदे हुए हैं जो मिट्टी पर बेल कर अंकित किये जाते थे और अपने स्वामी के अधिकार को व्यक्त करते हैं। लगभग इसी प्रकार की बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया में पायी गयी हैं। दोनों देशों में बेलनाकार मुद्राओं का आविष्कार स्वतन्त्र रूप से हुआ होगा, ऐसी सम्भावना कम ही है। ऐसी अवस्था में स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि उसका जन्म उन दोनों देशों में से कहाँ पर हुआ। मिश्र में ये मुहरें अचानक आविर्भूत हुई जान पड़ती हैं और शीघ्र ही अव्यवहृत होती जान पड़ती हैं। इसके विपरीत मेसोपोटामिया में उनका प्रचलन लगभग दो हजार वर्ष तक होता रहा मेसोपोटामिया में स्वाभाविक रूप से परम्परा गत मिट्टी का व्यवहार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखन सामग्री के रूप में होता रहा है। मिट्टी पर इन मुहरों की छाप आसानी से आ सकती थी। मिस्र में लेखन सामग्री कागज (पेपीरस) था जिस पर बेल कर आसानी से छाप नहीं उतारी जा सकती। इसलिए स्पष्ट रूप से अनुमान होता है कि कागज का प्रयोग करने वाले लोगों ने बेलनाकार मुहरों का आविष्कार कभी न किया होगा। इसलिए मानना चाहिये कि उन बेलनाकार मुहरों का जन्मस्थान मेसोपोटामिया है और मिस्र वालों ने उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनाया था।

इस अध्याय को समाप्त करते हुए एक बात और स्पष्ट कर देना उचित होगा कि पुरातत्वविद् अपनी खोजों के आधार पर मानव-इतिहास का बहुत कुछ अंशों तक निर्माण कर सकता है; वह उसके परिवर्तन के प्रमाण दे सकता है, शोध उपस्थित कर सकता है, सभ्यता के विकास को खोज कर बता सकता है, किसी नगर अथवा राष्ट्र के जीवन की ऐतिहासिक क्रम के अनुसार व्याख्या कर सकता है, किन्तु लिखित प्रमाण के अभाव में उनका काल निर्धारित नहीं कर सकता। बहुधा यह प्रश्न किया जाता है कि अमुक घटना कब हुई? पुरातत्वविद् यह तो बता सकता है कि वह किस अवस्था या किस अवसर पर हुई थी किन्तु उसके समय को वर्षों में गिन कर नहीं बता सकता। उसके पास इसे ज्ञात करने का न तो कोई निश्चित सिद्ध सिद्धान्त है और न कोई साधन। भूमि का स्तरीकरण भी किसी प्रकार के नियमित सिद्धान्त पर अवलम्बित नहीं होता। यदि पहले तीन फुट का समय प्रति फ़ुट सौ वर्ष आँका गया है तो इसका अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता कि दस फुट का अर्थ एक हज़ार वर्ष होगा। वह तीन चार हज़ार वर्ष का भी द्योतक हो सकता है। पुरातत्वविद् सुविधा के लिए समय को शताब्दियों में भले ही व्यक्त करे पर वस्तुतः वह उसका विचार नहीं ही करता है। उससे किसी तिथि के सम्बन्ध में पूछा जाय तो वह अनभिज्ञात्मक ही उत्तर देगा। ज्यों-ज्यों हम इतिहास युग से जो लिखित साधनों पर अवलम्बित होता है, प्रागैति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हासिक युग की ओर, जो पुरातत्व का प्रधान क्षेत्र है, बढ़ते हैं तो तिथियों के स्थान पर हमें युगों की शरण लेनी पड़ती है और व्यक्ति की अपेक्षा जाति की चेष्टाओं पर विचार करना पड़ता है। इस प्रकार पुरातत्वविद् इतिहास का चित्रण एक मोटी तूलिका से ही करता है। पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उसके चित्रण में यथार्थ का अंश है ही नहीं। उसमें यथार्थ का अंश पर्याप्त होता है यद्यपि उसे हम कल्पना-जन्य कह सकते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ अध्याय

समाधि-सामग्री

संसार के अनेक देशों में और इतिहास के अधिकांश काल में लोगों में किसी न किसी रूप में ऐसा कोई विश्वास प्रचलित रहा है कि मृत्यु के पश्चात् भी जीव का अस्तित्व रहता है। इस विश्वास के अनुसार जिन लोगों में शव को दाहक्रिया न कर समाधि में सुरक्षित रूप से रखने की प्रथा प्रचलित रही है, उन लोगों ने शव के साथ समाधि में ऐसी वस्तुएं रखना अपना कर्तव्य माना जिनकी उनके विश्वासानुसार मृत व्यक्ति को परलोक में आवश्यकता होती। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि समाधियों की खुदाई से पुरातत्वविदों को जो वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनसे इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सका है कि तत्कालीन लोगों का विश्वास मृत्यु के पश्चात् आत्मा के अस्तित्व में रहा है। इस कथन से हमारा तात्पर्य शव के वस्त्राभूषणों से नहीं है, वरन् हम उन वस्तुओं की ओर संकेत कर रहे हैं जिन्हें पुरातत्वविद् समाधि-सामग्री कह कर व्यक्त करते हैं।

यूनानी लोग शव के मुँह में एक सिक्का रखते थे ताकि वह वैतरणी पार करते समय शेरन को पार उतारने का कर दे सके। मिस्री लोग शव के साथ एक मृत्यु-पुस्तक रखते थे ताकि व्यक्ति परलोक में द्वारपाल-देव और दानवों के प्रश्नों और उनके जिरह के समय सभी बातों को याद रख कर ठीक-ठीक उत्तर दे सके और उसे प्रवेश करने में कठिनाई न हो। मेसोपोटामिया में खाने-पीने का सामान और बर्तन इसलिए रखा जाता था कि मृत व्यक्ति अपनी लम्बी यात्रा में उनका उपयोग कर सके। वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक समय यह भी विश्वास था कि यात्रा जल-मार्ग से होती है, इसलिए खाने-पीने के ये सारे सामान वर्तन आदि एक धातु-विशेष के नाव में रख कर शव के साथ रखे जाते थे। इस यात्रा के अतिरिक्त परलोक में भी एक जीवन है, ऐसा उन लोगों का विश्वास था। उसके सम्बन्ध में उन लोगों की कल्पना थी कि वह हमारे इस जीवन के समान ही होगा, इसलिए यह भी अनुमान किया जाता था कि उस लोक में मनुष्य की वे ही आवश्यकताएं होंगी और उसका वही व्यवसाय होगा जो इस लोक में रहा है। वह जिन वस्तुओं का इस लोक में प्रयोग करता रहा है, उन्हीं का प्रयोग वह वहाँ भी करेगा। इसलिए वे लोग उसके शव के साथ वे ही वस्तुएं रखते थे। स्त्रियों के साथ चर्खे का तकुआ, सुई, आइना, शृंगारदान; जौहरी के साथ तराजू और बाट; बढ़ई के साथ आरी और वसूला; सैनिक के साथ युद्ध के अस्त्र-शस्त्र रखे जाते थे। शासक के शव के साथ लौकिक तड़क-भड़क अनिवार्य था। सुमेर के शासकों के साथ न केवल सोना-चाँदी, जर-जवाहरात, कपड़े-वर्तन ही रखे जाते थे, वरन् उनके साथ कत्ल करके उनके मुसाहव लोग भी दफनाये जाते थे ताकि वे लोग उस लोक में उसके शासन-व्यवस्था में सहायता कर सकें। मिस्र के शासक—फिराऊनों के समाधियों की, जो पत्थर काट कर टेढ़े मेढ़े गुफा के रूप में वनाये गये थे, तड़क-भड़क अनोखी ही होती थी। वहाँ के सुप्रसिद्ध शासक-तूताखामन की समाधि की जब खुदाई हुई तो उसके वैभव को देख कर सारा संसार आश्चर्य-चकित रह गया।

इस प्रकार समाधियों में जो वस्तुएं संरक्षित होती हैं उनसे तत्कालीन जीवन का परिचय बहुत ही विस्तार के साथ मिलता है। इस दृष्टि से नगर और भवनों के अवशेषों की अपेक्षा समाधियों का पुरातत्वविद् के लिए विशेष महत्त्व होता है। किन्तु भारतवर्ष में अति प्राचीन काल से मृत्यु के पश्चात् शवदाह की प्रथा रही है, इस कारण यहाँ उस ढंग की समाधियाँ नहीं मिलतीं जिस ढंग की अन्यत्र पायी जाती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहीं-कहीं बर्तनों में रखे अस्थि-भस्म पाये जाते हैं पर उनमें पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व की सामग्री नहीं होती। अतः भारतीय पुरातत्व में समाधि-स्थलों की खुदाई की चर्चा नहीं पायी जाती और वह हमारे लिए महत्त्व नहीं रखता। फिर भी हम अन्यत्र होने वाली समाधियों की खुदाई की चर्चा इस दृष्टि से कर रहे हैं कि उसकी अनेक बातें हमारे लिए उपयोगी हो सकती हैं।

प्राचीन काल से आज तक धन के लोभियों की कमी नहीं रही है। वे लोग सदैव इस बात के इच्छुक रहे हैं कि जहाँ से भी हो धन प्राप्त किया जाय। अस्तु, प्राचीन विश्वास को जानते और मानते हुए भी इन लोभियों की दृष्टि से किसी भी देश की समाधियों का बचा रहना अत्यन्त कठिन था। अतएव अधिकांश महत्त्व की समाधियों का धन इन्हीं लोभियों के हाथ लगा और आज उनका पुरातात्विक महत्त्व नष्ट हो गया है। उर की समाधियों की खुदाई में अनेक सुरंगों के अवशेष मिले हैं जिनके द्वारा चोरों ने घुस कर भीतर ही भीतर चोरी की थी। इन चोरों के लिए समाधियों का पता लगाना कठिन न था। वहाँ आज की समाधियों की भाँति ही पक्की समाधियाँ बनायी जाती थीं। थेब के शासकों की घाटी में स्थित फिराउनों के समस्त समाधियों में केवल एक—तूताखामन की समाधि अब तक लुटेरों की दृष्टि से बची हुई थी।

ये लुटेरे अपना काम उन्हीं दिनों आरम्भ कर चुके थे क्योंकि २०वें राजवंश के फिराऊनों ने थेब की घाटी में होने वाली लूट की जाँच के लिए एक कमीशन बैठाया था। उस कमीशन की पूरी रिपोर्ट प्राप्त हुई है। यह लूटपाट केवल शाही समाधियों तक ही सीमित नहीं था। मिस्र की ९९ प्रतिशत प्रास्तरिक समाधियाँ लुटेरों की नजर से नहीं बच सकीं और उनकी अधिकांश सामग्री निकाल ली गयी है। जो बची भी है वह ऐसी है जो लुटेरों की दृष्टि में निरर्थक थी। ऐसी अवस्था में यदि कोई समाधि साबित दिखाई पड़े तो उसके प्रति पुरातत्वविद् का आशावान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होना स्वाभाविक है किन्तु वहाँ भी उसकी आशा दुराशा मात्र ही हो सकती है। दक्षिण मिस्र के करानाग नामक स्थान में ईसा शताब्दी के आरम्भ की एक कब्रस्तान की खुदाई में देखा गया कि जिन समाधियों के द्वार ईंटों से पूर्ण रूप से बन्द और सुरक्षित जान पड़ते थे, खोलने पर उनमें कोई ऐसी वस्तु नहीं मिली जो मूल्यवान हो। बात यह थी कि समाधियों के दूसरी ओर मृतात्माओं को जल का अर्घ देने के लिए एक गढ़ा बना होता था। डाकुओं ने उसमें घुस कर पीछे की ओर छेद कर लिया था जिसमें केवल हाथ जा सके। यह छेद उनके लिए पर्याप्त था क्योंकि उन्हें मालूम था कि मूल्यवान वस्तुएं किस दिशा में और किस तरह रखी जाती हैं। पुरातत्वविद जब उन समाधियों में घुसे तो उन्हें प्रत्येक वस्तुएं यथास्थान सुरक्षित मिलीं। रंगीन मिट्टी के बर्तन, काँसे के प्याले, शीशे की बोतलें, शृंगारदान आदि सब सुव्यवस्थित ढंग से रखे थे। शव भी अक्षुण्ण एवं अपनी स्वाभाविक अवस्था में था। किन्तु शव के पीछे की दीवाल में छेद था और गले के पास माला के दो-तीन दाने बिखरे हुए थे जिनसे स्पष्ट ज्ञात हुआ कि चोरों ने माला चुरायी है। कहीं-कहीं शव का दाहना हाथ पीछे की ओर मुड़ा हुआ और एक उँगली टूटी हुई दीख पड़ी जिसका अर्थ यह था कि बहुमूल्य अँगूठी के लिए ही चोरों ने ऐसा किया होगा।

इस प्रकार चाहे जिस देश की समाधियों की खोज की जाय, पुरातत्वविद् को चोरों से बचे हुए सामग्री पर ही सन्तोष करना होता है और उन्हें शायद ही कभी कोई अछूती समाधि प्राप्त होती हो। किन्तु उनके सामने अकेले यही एक समस्या नहीं होती। चोरों की समस्या से अधिक महत्त्व की समस्या मिट्टी और समाधि की अवस्था की होती है।

मिस्र की चट्टानों को काट कर बनायी गयी समाधियाँ प्रायः बालू के नीचे दबी होने के कारण सूखी और वायु के प्रभाव से मुक्त पायी जाती हैं। इस कारण उनमें वस्तुएं कम से कम नष्ट मिलती हैं। लकड़ी की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्तुएं भले ही खिंच गयी और टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी हों, अथवा उनमें घुन लग गया हो और वे खोखली हो गयी हों, फिर भी उनका अस्तित्व तो रहता ही है। इस प्रकार तीन-चार हजार वर्ष वीत जाने पर भी उन समाधियों में रखी गयी चारपाई की पट्टियों, सन्दूकों और उनकी नक्काशियों को कम हानि पहुँची है। वहाँ कपड़े भी अपनी स्वाभाविक अवस्था में पाये गये हैं। स्त्रियों के कपड़े यद्यपि काल के प्रभाव से पीले पड़ गये हैं फिर भी आज तक काफी नर्म और मजबूत बने हुए हैं, और पहने जा सकते हैं। धातु की वस्तुओं में भी नाममात्र का परिवर्तन हो पाया है।

इसी प्रकार डेनमार्क में ताम्रयुग के शव पेड़ों के तनों के बने कफ़न में दबे पाये गये हैं। यद्यपि उन्होंने समय के प्रभाव से प्रास्तरिक रूप धारण कर लिया है, उनके वस्त्रों के रंग में परिवर्तन हो गया है तथापि वे ज्यों के त्यों हैं। इनके ठीक विपरीत उर में शव और सामग्री के ऊपर एक मामूली चटाई लपेट दी जाती थी, जिसके कारण वहाँ की समाधियाँ खुदाई के समय अत्यन्त नष्ट अवस्था में पायी जाती हैं। लकड़ी की वस्तुओं का तो मिट्टी के चिकने स्तर पर एक छाप मात्र बच रहता है। उस पर बहुत ही बारीक मटमैली सी बुकनी दिखाई पड़ती है जिसका केवल चित्र-मात्र लिया जा सकता है और वह साँस की हलकी सी फूंक से उड़ जा सकती है। ताम्र और काँस्य की वस्तुएं तो नष्ट होकर हरे रंग के आकृतिहीन ढेलों के रूप में परिवर्तित मिलती हैं। चाँदी का अस्तित्व केवल नीले रंग की बुकनी के रूप में पाया जाता है और शव की हड्डियाँ भी गल गयी होती हैं, और दाँत केवल यह व्यक्त करने को बचा रहता है कि वहाँ कोई मानव चिर-विश्राम कर रहा था। दाँत एक ऐसी विचित्र वस्तु है जो जीवन में बड़ी शीघ्रता से नष्ट होता रहता है किन्तु मृत्यु के पश्चात् उसका नष्टीकरण एक दम बन्द हो जाता है और अज्ञात काल तक अक्षुण्ण बना रहता है।

समाधियों की रूपरेखा के अनुसार उनकी खुदाई भिन्न-भिन्न ढंग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से की जाती है। मिस्र की आरम्भकालीन समाधियाँ मरुस्थल के किनारे बालू में खुदे हुए छिछले गढ़े के रूप में पायी जाती हैं। यदि वायु द्वारा प्रसारित बालू को हटा दिया जाय तो ऊपर की वृताकार योजना की स्पष्ट रूपरेखा अभ्यस्त आँखों को समाधियों का पता बता देती है। इसी आधार पर यदि वहाँ के गुहा-समाधियों पर से बालू और पत्थर के टुकड़े हटा दिये जायँ तो वे चट्टानें, जिनमें समाधियाँ खोदी गयी हैं, दीखने लगती हैं फिर उनकी वाह्य रूपरेखा भी ज्ञात हो जाती है। उसके बाद तो गढ़े का कूड़ा कर्कट ही हटाना रह जाता है। अन्ततः तीस-चालीस अथवा सौ फुट जाने पर गुहा का द्वार मिल जाता है। कर्शमिश में सर ऊले को घास के गुच्छों के आधार पर समाधियों का अनुमान हुआ था, यह हम आरम्भ के पृष्ठों में उल्लेख कर चुके हैं। उर में समाधियों के ज्ञान का कोई प्रत्यक्ष साधन नहीं है। वहाँ तो दूर तक भूमि खोदने की आवश्यकता होती है। वहाँ समाधियाँ एक के ऊपर दूसरी, इस प्रकार नीचे तक चली गयी होती हैं। यहाँ तक कि ८० गज लम्बे ६० गज चौड़े और ४० फुट गहरी खुदाई में पुरातत्वविदों को १८०० समाधियों के चिह्न प्राप्त हुए थे।

समाधियों की खुदाई में मूल सिद्धान्त यही रहता है कि कोई चीज़ अपने स्थान से हटाई न जाय। यही सिद्धान्त भवनों और नगरों की खुदाई में भी लागू होता है। फोटो, नकशा, विवरण आदि प्रत्येक आलेखन में प्रत्येक वस्तु का यथास्थान निर्देश होना चाहिये। यह बात सुनने में विचित्र तथा कार्य व्यवस्था में व्यर्थ तूल सा जान पड़ता है किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से यह बात नहीं है। सम्भव है इस प्रकार के सूक्ष्म परीक्षण का परिणाम स्वल्प हो पर उससे बहुत कुछ ज्ञात होने की सम्भावना बनी रहती है। पुरातत्वविद् को तो प्राप्त होने वाली चीजों से ही प्रत्येक बातों का ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है, इसलिए जो कुछ भी सामग्री हो, उसकी उपेक्षा उसके लिए सम्भव नहीं है, भले ही उस समय उसकी समझ में उसका कोई मूल्य न जान पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समाधि की स्थिति और उसकी गहराई का अध्ययन करने और प्राप्त वस्तुओं तथा समाधि के विवरण के आलेखन के बाद पुरातत्वविद् का ध्यान उसमें पायी गयी वस्तुओं की ओर जाता है। समाधि की किसी वस्तु को प्रायः अपने स्थान पर रहने देना सुगम नहीं है। समाधियों की प्रायः ऐसी अवस्था होती है कि बिना हानि पहुँचाये उसके किसी वस्तु को या उसके आस-पास की भूमि को छुआ नहीं जा सकता। उन स्थानों में जहाँ शव अत्यन्त निकट और ऊपर नीचे रखे गये हों, वहाँ किसी एक समाधि की रूपरेखा का निश्चय करना बहुत ही कठिन होता ह। ऐसी अवस्था में किसी के लिए यह निर्णय करना कि अमुक वस्तु अमुक समाधि की है दुष्कर सा होता है। हो सकता है कि किसी समाधि की खुदाई के समय मिली कोई वस्तु, किसी अज्ञात समाधि के किसी अन्य वस्तु का भाग या अंश हो। देखने में तो ऐसा जान पड़ता है कि किसी वस्तु के एक दूसरे समाधि से सम्बद्ध हो जाने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं, पर बात वस्तुतः ऐसी नहीं है। किसी वस्तु के इधर-उधर हो जाने में पुरातत्वविद् को काल-निर्णय में कठिनाई हो सकती है। यही बात नगर और भवनों की खुदाई में भिन्न स्तरों की चीजें एक दूसरे में मिल जाने पर हुआ करती है।

इसके अतिरिक्त यह बात भी तो सम्भव है कि पितरों को उस समय कुछ भेंट दी गयी हो जब समाधि में मिट्टी डाली जा चुकी हो। इस प्रकार की वस्तु समाधि के धरातल के ऊपर ही कहीं पड़ी मिलेगी। जब तक ये सारी बातें नोट न कर ली जायँ, समाधि के साथ उनका सम्बन्ध ज्ञात न हो सकेगा और साथ ही उस विशेष रीति-रिवाज का प्रमाण अन्धकार में ही रह जायेगा। इसलिए पुरातत्वविद् को समाधि के अस्तित्व का अनुमान होते ही बड़ी सतर्कता से अपना काम आरम्भ करना पड़ता है।

सर ऊले को उर में एक समाधि का पता भूमि के ऊपर ताम्र के एक भाले की नोक की चमक से चला। उन लोगों ने उसके आधार पर उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चारों ओर की भूमि साफ की, फलस्वरूप उन्हें सोने की पतली चादर की बनी नली सी वस्तु दिखाई पड़ी जो भाले के डंडे के ऊपर लगी हुई थी। उसके नीचे उन्हें लकड़ी के डंडे के अस्तित्व के रूप में एक छेद दिखाई पड़ा क्योंकि लकड़ी सड़ कर नष्ट हो चुकी थी। उस छेद के आधार पर उन्होंने खुदाई जारी रखी और अन्ततः उन्हें समाधि का पता लगा और वे उस समाधि की रूपरेखा को निर्धारित करने एवं कफन के चारों ओर संग्रहीत वस्तुओं के आलेखन में सफल हो सके।

एक अन्य समाधि की खोज में उन्हें एक छेद मिला और उससे कुछ हट कर एक दूसरा छेद दिखाई पड़ा। उन छेदों की रूपरेखा कुछ असाधारण सी जान पड़ी, इसलिए लकड़ी के नष्ट हो जाने से बने उन छेदों में पुरातत्वविदों ने प्लास्टर आव पेरिस उडेलना आरम्भ किया। फलस्वरूप जो प्लास्टर कास्ट तैयार हुआ वह हार्प नामक वाद्ययन्त्र निकला जिसके सारे अस्तित्व का लोप हो चुका था केवल उसके मुँह पर लगा ताम्र का वृषभ-मुख शेष था। वह भी प्लास्टर कास्ट में यथा स्थान चिपक गया। इस प्रकार समाधिके अस्तित्व ज्ञान के साथ-साथ अनजाने में उस अमूल्य वस्तु का संरक्षण भी कर लिया गया जो जरा सी असावधानी से लुप्त हो जाता। इस प्रकार खुदाई में साधारण सी साधारण बात पर ध्यान रखना आवश्यक होता है।

समाधियों की सफाई एक दुरूह कार्य है। मिट्टी को इस प्रकार हटाना कि सारी वस्तुएं यथा स्थान बनी रहें और उनका चित्र भी भली प्रकार लिया जा सके, बहुत समय और धैर्य का काम है। हर समय ध्यान रखना पड़ता है कि मिट्टी हटाते समय कोई वस्तु अपने स्थान से हट न जाय, वे वस्तुएं जिनका अस्तित्व मिट्टी में ही है, नष्ट न हो जायँ।

समाधियों के सम्बन्ध में तैयार किये गये विवरणों का अध्ययन कर तत्कालीन समाज के जीवन, रहन-सहन और रीति-रिवाज का बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है। शव की अवस्था और दिशा को देख कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काल, जाति, धार्मिक विश्वास आदि का निर्णय किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य बातों के सहारे सामाजिक जीवन का भी अनुमान किया जा सकता है। यथा—गले और बाहुओं में विभिन्न प्रकार के आभूषणों के दाने किस क्रम से गुथे थे, यदि पुरातत्वविद् उन्हें उसी क्रम से गूंथ सकने में सफल हो, जिस क्रम से वह मूल रूप में गुथा रहा हो, तो वह उससे बहुत कुछ तत्कालीन आभूषणों और उसके फैशन पर प्रकाश डाल सकता है और तत्कालीन पहरावे का ज्ञान हो सकता है। उसका यह ज्ञान बिखरे दानों को एकत्र कर कल्पना करने की अपेक्षा अधिक प्रामाणित होगा। किन्तु ऐसा करने के लिए अन्वेषक को घंटों कंकाल के ऊपर झुके अथवा पड़े रहने का कष्ट उठाना पड़ सकता है।

पुरातत्वविद् को अपने विवरण में प्रत्येक वस्तु के नाम और नपी हुई रेखाकृति, समाधि में उनके प्राप्त होने की स्थिति आदि का आलेखन करना पड़ता है। उसके विवरण में अंकित अंक प्रत्येक वस्तु के ऊपर भी लिख दिये जाते हैं ताकि पीछे आवश्यकता होने पर वे सारी वस्तुएं उसी रूप में अध्ययन के लिए सजाई जा सकें जिस रूप में वे पायी गयी थीं। समाधि में प्राप्त वस्तुओं का विवरण तैयार करने का काम उस समय बहुत ही कठिन हो जाता है जब समाधि-स्थित वस्तुएं विनष्टप्राय अवस्था में होती हैं, अथवा जब किसी विनष्टप्राय वस्तु के संरक्षण की आवश्यकता आ उपस्थित होती है। संग्रहालय में सजी वस्तुओं को देख कर उन वस्तुओं की प्राप्ति में किये जाने वाले श्रम का अनुमान नहीं किया जा सकता। यह कार्य कितने धैर्य का है, इसका अनुमान डाक्टर रेजनर द्वारा गीज़ में बड़े पिरामिड के निकट प्राप्त रानी हेतप-हरस की समाधि में किये गये श्रम से किया जा सकता है।

भवन के पीछे, जहाँ पिरामिड के निर्माता राजा केफरेन की माँ का खाली ताबूत रखा हुआ था, ईंटों से बन्द ताक के भीतर उन्हें घुन के खाये हुए लकड़ी का आटा और कुछ सोने के पत्तरों के टुकड़े पड़े हुए मिले। जमीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर छोटे-छोटे आकृति शब्द चित्र बिखरे हुये थे जो लकड़ी के घुन जाने से गिर गये थे । इन सारी वस्तुओं को यदि यों ही उठा लिया जाता तो उनसे केवल यही ज्ञात हो पाता कि पाँच हजार वर्ष पूर्व मिस्र के शासकों की वस्तुएं किस प्रकार अलंकृत की जाती थीं । किन्तु किया यह गया कि खनकों ने बड़े परिश्रम से उस भवन का एक-एक इंच भाग साफ किया, प्रत्येक छोटी से छोटी वस्तु का स्थान अंकित किया गया और २८० दिन निरन्तर श्रम करके हजारों पेज के विवरण और लगभग एक हजार फोटो तैयार किये गये । फिर लकड़ी के तीन फ्रेमों और एक तख्ते के आधार पर, जो अपने आकार की छाया मात्र रह गये थे और जिनमें जोड़ के चिह्न वर्तमान थे, वे लोग एक अद्‌भुत वस्तु—साम्राज्ञी को ले जाने की कुर्सी बनाने में समर्थ हुए । भूमि पर बिखरे हुए शब्दाकृति अपने स्थानों के आधार पर समूह के रूप में एकत्र किये गये और फिर उनको इस प्रकार संकलित किया गया कि उचित अर्थ दे सकें । वे कुर्सी के ऊपरी भाग को सुशोभित करते थे । इस प्रकार नयी लकड़ी और पुराने सोने के संयोग से नष्ट हुए मूल वस्तु का निर्माण हुआ । सोने तथा लकड़ी के अन्य अवशेषों और उसी कष्टसाध्य उपायों से एक आरामकुर्सी, आभूषण का बक्स, चारपाई आदि भी सुरक्षित की गयीं । समाधि से इन वस्तुओं के निकलने के पश्चात् उनके संरक्षण में डाक्टर रेजनर और उनके साथियों को पूरे दो वर्ष लगे । इसी प्रकार उर में साम्राज्ञी शब-अद के रथ का संरक्षण किया गया । इस रथ की लकड़ी एक दम नष्ट हो गयी थी । उसके अलंकरण के सारे सामान मिट्टी में चिपके थे । उन्हें उठाने के लिए गर्म लाख का प्रयोग किया गया और इस प्रकार उनका स्थान अक्षुण्ण बनाया गया फिर विवरणों के सहारे नाप तोल कर पाँच हजार बरस पुराने रथ के मूल रूप को बनाने का सफल प्रयत्न किया गया ।

पुरातात्विक कार्य के लिए लाख अत्यन्त महत्त्व की वस्तु है और उसका उपयोग बहुत ही सुगम है । उर में निवास करने वाले मनष्यों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की अस्थियाँ बाढ़ के पश्चात पचास फीट से अधिक मिट्टी के नीचे दब गयीं और उसके बोझ से चिपटी हो गयीं और कहीं-कहीं नष्ट होकर एक दम चूर नहीं हुई थीं, वहाँ उनके छोटे-छोटे टुकड़े हो गये थे। कंकाल की दृष्टि से वे सुरक्षित कहे जा सकते थे और मानुष वैज्ञानिकों की दृष्टि से उनका अमूल्य महत्त्व था। पर प्रश्न यह था कि उन्हें सुरक्षित रूप में वहाँ से हटाया कैसे जाय। अस्तु, जहाँ तक सम्भव हो सका मिट्टी खुरच कर साफ कर दी गयी, उसके पश्चात् अस्थि तथा उसके आस-पास की भूमि पर गर्म करके लाख बिछा दिया गया, किन्तु नीचे की मिट्टी शताब्दियों से असूर्य-पश्या रहने के कारण इतनी नम हो गयी थी कि ऊपर ही चपड़े की हलकी पर्त पड़ कर रह गयी और भीतर प्रवेश न कर सकी। ऐसी अवस्था में किया यह गया कि गर्म लाख में कपड़े के हलके-हलके पर्त भिगो कर अस्थि के ऊपर रख कर दबाये गये ताकि लाख में अस्थि अच्छी तरह चिपक जांय। जब इस प्रकार ऊपर का सारा अंश ढका जा चुका तो धीरे-धीरे नीचे की मिट्टी हटाई गयी और अस्थि को मिट्टी के दो तीन पतले-पतले स्थम्भों पर टंगा रख कर रुई के फाये बिछाये हुए तख्त पर उलट दिया गया। पश्चात रही सही मिट्टी साफ कर चपड़े के पर्त से दुबारा अच्छी तरह ढक कर सुरक्षित बना दिया गया। इस प्रकार अस्थि को सुरक्षित कर अस्थि को लंदन भेजा गया। वहाँ ऊपर का लाख हटा कर बेकार चपड़े को बेंजिन से धोकर साफ किया गया पश्चात् विकृत हड्डियों को हाड्रोजन पराक्साइड से धोकर सख्त कर लिया गया। इस प्रकार अस्थि, अपने मूल रूप में बिना एक भी टुकड़े के व्यतिक्रम हुए ही, प्रदर्शित किया जा सका।

मेसोपोटामिया में अन्वेषकों के सामने लिखित फलकों के, जो अत्यन्त महत्त्व की पुरातात्विक सामग्री हैं, संरक्षण की समस्या उपस्थित होती है। बहुधा ये फलक कच्ची मिट्टी के होते हैं और नम मिट्टी में दबे होने के कारण बर्फी के सामन अत्यन्त नर्म हो गये होते हैं और आस-पास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर छोटे-छोटे आकृति शब्द चित्र बिखरे हुये थे जो लकड़ी के घुन जाने से गिर गये थे। इन सारी वस्तुओं को यदि यों ही उठा लिया जाता तो उनसे केवल यही ज्ञात हो पाता कि पाँच हजार वर्ष पूर्व मिस्र के शासकों की वस्तुएं किस प्रकार अलंकृत की जाती थीं। किन्तु किया यह गया कि खनकों ने बड़े परिश्रम से उस भवन का एक-एक इंच भाग साफ किया, प्रत्येक छोटी से छोटी वस्तु का स्थान अंकित किया गया और २८० दिन निरन्तर श्रम करके हजारों पेज के विवरण और लगभग एक हजार फोटो तैयार किये गये। फिर लकड़ी के तीन फ्रेमों और एक तख्ते के आधार पर, जो अपने आकार की छाया मात्र रह गये थे और जिनमें जोड़ के चिह्न वर्तमान थे, वे लोग एक अद्भुत वस्तु—साम्राज्ञी को ले जाने की कुर्सी बनाने में समर्थ हुए। भूमि पर बिखरे हुए शब्दाकृति अपने स्थानों के आधार पर समूह के रूप में एकत्र किये गये और फिर उनको इस प्रकार संकलित किया गया कि उचित अर्थ दे सकें। वे कुर्सी के ऊपरी भाग को सुशोभित करते थे। इस प्रकार नयी लकड़ी और पुराने सोने के संयोग से नष्ट हुए मूल वस्तु का निर्माण हुआ। सोने तथा लकड़ी के अन्य अवशेषों और उसी कष्टसाध्य उपायों से एक आरामकुर्सी, आभूषण का बक्स, चारपाई आदि भी सुरक्षित की गयीं। समाधि से इन वस्तुओं के निकलने के पश्चात् उनके संरक्षण में डाक्टर रेजनर और उनके साथियों को पूरे दो वर्ष लगे। इसी प्रकार उर में साम्राज्ञी शब-अद के रथ का संरक्षण किया गया। इस रथ की लकड़ी एक दम नष्ट हो गयी थी। उसके अलंकरण के सारे सामान मिट्टी में चिपके थे। उन्हें उठाने के लिए गर्म लाख का प्रयोग किया गया और इस प्रकार उनका स्थान अक्षुण्ण बनाया गया फिर विवरणों के सहारे नाप तोल कर पाँच हजार बरस पुराने रथ के मूल रूप को बनाने का सफल प्रयत्न किया गया।

पुरातात्विक कार्य के लिए लाख अत्यन्त महत्त्व की वस्तु है और उसका उपयोग बहुत ही सुगम है। उर में निवास करने वाले मनष्यों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की अस्थियाँ बाढ़ के पश्चात पचास फीट से अधिक मिट्टी के नीचे दब गयीं और उसके बोझ से चिपटी हो गयीं और कहीं-कहीं नष्ट होकर एक दम चूर नहीं हुई थीं, वहाँ उनके छोटे-छोटे टुकड़े हो गये थे। कंकाल की दृष्टि से वे सुरक्षित कहे जा सकते थे और मानुष वैज्ञानिकों की दृष्टि से उनका अमूल्य महत्त्व था। पर प्रश्न यह था कि उन्हें सुरक्षित रूप में वहाँ से हटाया कैसे जाय। अस्तु, जहाँ तक सम्भव हो सका मिट्टी खुरच कर साफ कर दी गयी, उसके पश्चात् अस्थि तथा उसके आस-पास की भूमि पर गर्म करके लाख बिछा दिया गया, किन्तु नीचे की मिट्टी शताब्दियों से असूर्य-पश्या रहने के कारण इतनी नम हो गयी थी कि ऊपर ही चपड़े की हलकी पर्त पड़ कर रह गयी और भीतर प्रवेश न कर सकी। ऐसी अवस्था में किया यह गया कि गर्म लाख में कपड़े के हलके-हलके पर्त भिगो कर अस्थि के ऊपर रख कर दबाये गये ताकि लाख में अस्थि अच्छी तरह चिपक जांय। जब इस प्रकार ऊपर का सारा अंश ढका जा चुका तो धीरे-धीरे नीचे की मिट्टी हटाई गयी और अस्थि को मिट्टी के दो तीन पतले-पतले स्थम्भों पर टंगा रख कर रुई के फाये बिछाये हुए तख्त पर उलट दिया गया। पश्चात रही सही मिट्टी साफ कर चपड़े के पर्त से दुबारा अच्छी तरह ढक कर सुरक्षित बना दिया गया। इस प्रकार अस्थि को सुरक्षित कर अस्थि को लंदन भेजा गया। वहाँ ऊपर का लाख हटा कर बेकार चपड़े को बेंजिन से धोकर साफ किया गया पश्चात् विकृत हड्डियों को हाड्रोजन पराक्साइड से धोकर सख्त कर लिया गया। इस प्रकार अस्थि, अपने मूल रूप में बिना एक भी टुकड़े के व्यतिक्रम हुए ही, प्रदर्शित किया जा सका।

मेसोपोटामिया में अन्वेषकों के सामने लिखित फलकों के, जो अत्यन्त महत्त्व की पुरातात्विक सामग्री हैं, संरक्षण की समस्या उपस्थित होती है। बहुधा ये फलक कच्ची मिट्टी के होते हैं और नम मिट्टी में दबे होने के कारण बर्फी के सामन अत्यन्त नर्म हो गये होते हैं और आस-पास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की मिट्टी से चिपके रहते हैं। उनको साफ कर सुरक्षित रखना एक जटिल कार्य है। यों साफ करने में चिह्नों के मिट जाने का भय होता है, और चिह्नों के ही कारण उन फलकों का महत्त्व होता है। यदि उन्हें यों ही उठा कर रख दिया जाय तो उनके फट जाने और कभी-कभी चूर हो जाने का डर रहता है। फिर वहाँ की मिट्टी में लोना होने की अधिक सम्भावना होती है। अतः उनके निर्यात में भी टूट जाने का भय बना रहता है। इन सब के ऊपर खुदाई करने वाले पुरातत्वविद् के लिए आवश्यक है कि वह जल्दी से जल्दी उनमें अंकित बातें, यथा—तारीख, निर्माता का नाम आदि ज्ञात करे और उनसे अपने काम में सहायता ले। इसलिए उर में खुदाई करने वाले पुरातत्वविदों को ज्योंही किसी मिट्टी के टुकड़े के भीतर फलक होने का अनुमान हुआ, वे उसे साफ बालू से भरे डिब्बों में बन्द कर सूखने को रख देते हैं फिर उन बन्द डिब्बों को भट्ठी में डाल कर लाल कर लेते हैं जिससे मिट्टी पक जाती है। उसके बाद वे फलक को निकाल लेते हैं। यद्यपि उनके रंग में परिवर्तन हो जाता है, तथापि फलक सख्त और मजबूत हो जाते हैं और उनके टुकड़े आसानी से जोड़े जा सकते हैं और चिह्नों के मिटने के भय के बिना ही उन्हें ब्रश से साफ किया जा सकता है। इस प्रकार कोई भी लेख चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, पूर्ण रूप से सुरक्षित हो जाता है।

इस प्रकार मैदानों में किया जाने वाला पुरातात्विक कार्य एक प्रकार से पुरातत्व की भूमिका मात्र होता है। उसे सुरक्षित रूप से हटा कर उसके पूरक अंशों को एकत्र करना, प्रदर्शन योग्य बनाना बहुधा उलझन-पूर्ण और कठिन कार्य होता है और वह किसी संग्रहालय की रसायनशाला में ही, जहाँ सब प्रकार की सुविधा और रसायन प्रयोग का प्रबन्ध हो, किया जा सकता है। इस क्षेत्र में भी पुरातत्वविद् को विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है ताकि वह संरक्षण की ओर समुचित ध्यान दे सके। यदि उसे इसका ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं है तो उसके संरक्षण का प्रयत्न भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कभी-कभी उसके विनाश का कारण हो सकता है। संरक्षण का कार्य स्वतः एक विस्तृत विज्ञान है। उसकी चर्चा इस पुस्तक में सम्भव नहीं है। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि खोद कर निकाली गयी वस्तुओं का संरक्षण पुरातत्वविद् का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। खुदाई के बाद वह उसी की ओर ध्यान देता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचम अध्याय

इतिहास का निर्माण

हमने अब तक जो कुछ कहा है वह केवल भूमि में दबी हुई प्राचीन काल की वस्तुओं को भूमि से बाहर निकाल कर संरक्षित करने से सम्बन्ध रखता है। पर सच पूछा जाय तो पुरातत्वविद् की विद्वता की परीक्षा इतना सब कुछ करने के बाद ही आरम्भ होती है। वह अपनी खुदाई में प्राप्त चीजों की व्याख्या करके हमारे सम्मुख उस युग के इतिहास के विभिन्न पहलुओं को उपस्थित करता है। यही सामान्य पाठक के लिए कौतूहल का विषय है।

पहली स्मरणीय बात यह है कि हम ज्यों-ज्यों प्राचीन काल की ओर विचार करते हैं, हमारे ज्ञान की परिधि सीमित होती जाती है और उसके लिए हमें अवधि की बड़ी इकाई निर्धारित करनी पड़ती है। पुरातत्व में प्रागैतिहासिक काल के लिए शताब्दी जैसी इकाई छोटी मालूम पड़ती है। तथापि यह बहुत संभव है कि उस समय भी एक शताब्दी में उतने ही परिवर्तन हुए हों जितने कि आज की शताब्दी में हो रहे हैं। ऐसी अवस्था में यदि कोई पुरातत्वविद् अपनी खुदाई की उन सारी वस्तुओं को जो ४०० वर्ष के काल के बीच की हों, एक स्थान पर एकत्र कर दे तो यह तो निश्चित है कि किसी के लिए भी यह सम्भव न होगा कि उन ४०० वर्ष के बीच के किसी काल की अवस्था को उन वस्तुओं को देख कर बता सके। आज का जीवन अकबर काल (१५५६–१६०५ ई०) के जीवन से एक दम भिन्न है। यह हम सब जानते हैं। किन्तु यदि इन ४०० वर्षों के बीच भारतीय गृहस्थ-जीवन में काम में आने वाली सभी चीजों, वस्त्रा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भूषण आदि सब को एक स्थान पर मिला कर रख दिया जाय और कोई इतर-लोकवासी उसे आकर देखे तो वह केवल इतनी ही कल्पना कर सकेगा कि इस काल की सभ्यता उन्नत थी पर किस समय कैसा रहन-सहन था इसकी वह कदापि कल्पना न कर सकेगा। किन्तु यदि वे ही वस्तुएं काल-क्रम से संकलित कर दी जायँ तो वह इतरलोकवासी अपनी बुद्धि का उपयोग कर न केवल अलग-अलग काल का ही ज्ञान प्राप्त कर लेगा वरन् उसके विकास क्रम का भी उसे अनुमान हो सकेगा। ठीक इसी बात को पुरातत्वविद् अपनी खुदाई में प्राप्त चीजों के आधार पर उपस्थित करने की चेष्टा करता है।

जिन स्थानों से अभिलेख या अभिलेख अंकित मुद्राएं प्राप्त होती हैं वहाँ की खुदाई से प्राप्त सामग्री से इतिहास ज्ञान का विस्तार सुगमता से हो सकता है। सूडान प्रान्त के मेरो नामक स्थान में डाक्टर रेजनर ने कतिपय ऐसे पिरामिडों की खुदाई की जो अन्य अवैज्ञानिक खनकों की दृष्टि से बच गये थे। वहाँ प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात हुआ कि वे इथोपिया (अबीसीनिया) के राजा और रानियों की समाधियाँ हैं। ७वीं शताब्दी ईसा पूर्व के लगभग मिस्र पर इथोपिया निवासी शासकों का अधिकार था। उनके नाम तो अंकित मिलते थे पर यह तनिक भी ज्ञात न था कि वे विजेता अपने दक्षिणी निवास स्थान में किस प्रकार आविर्भूत हुए और मिस्र से निकाले जाने पर उनका क्या हुआ। डाक्टर रेजनर को सारी समाधियों का काल क्रम बिठाने में सफलता मिली और उसके आधार पर वे सारे वंश की वंशावली तैयार करने में समर्थ हुए। इस प्रकार केवल एक खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर उस काल का विस्तृत इतिहास लिखा जा सका और सभ्यता का ज्ञान हो सका जो किसी समय मिस्र में व्याप्त था। हमारे यहाँ कौशाम्बी का नाम बौद्ध-साहित्य में बहुत मिलता है पर उसका इतिहास लुप्तप्राय है। आज हमें उसके कितने ही शासकों का पता केवल उनकी मुद्राओं से लग सका है यद्यपि हम अभी उनके कालक्रम को क्रमबद्ध नहीं कर सके हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि किसी खुदाई में कोई लिखित सामग्री न मिले तो पुरातत्वविद् को अपने अन्य साधनों की सहायता लेना होगा। उसे पूर्व देखी हुई वस्तुओं के आधार पर निष्कर्ष निकालना पड़ेगा और उस निष्कर्ष की सत्यता उसके विवरण की पूर्णता और यथातथ्य होने पर निर्भर करता है। पहले हमने इस बात का संकेत किया है कि किसी वस्तु का किसी गलत समाधि से सम्वद्ध कर दिये जाने पर कालक्रम की सारी व्यवस्था बिगड़ सकती है। यह बात भवनों के स्तरों के सम्बन्ध में भी है। चाहे यह बहुत अंशों में सत्य न हो, तथापि यह तो निश्चित है कि जब तक सही रूप से वस्तुओं का चयन न हो, कोई भी कालक्रम ठीक रूप में निश्चित नहीं किया जा सकता।

जहाँ भवन अधिक होते हैं अथवा समाधियों की संख्या अधिक होती है और वस्तुएं भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती हैं, वहाँ बहुत कुछ अंशों में नवीनतम और प्राचीनतम वस्तुओं में भेद करना सम्भव होता है। कुछ प्रकार की वस्तुओं में कला के विकास का चिह्न निश्चित रूप से प्राप्य होता है; फिर वस्तुओं के धीरे-धीरे रूढ़िगत बनने, उनके अलंकरण के विकृत होने, बर्तनों के रूपों में परिवर्तन के चिह्न आदि बातें किसी भी समय के निश्चित करने में सहायक होती हैं। इसलिए पुरातत्वविद् अपने विवरणों के मूल्य का विश्लेषण चार्टों के रूप में उपस्थित करता है। समानान्तर कोष्टकों में वह प्रत्येक भवन या समाधि का अंक उसके सम्बन्ध के अन्य विवरण तथा उनमें पायी गयी वास्तु-सामग्री लिखेगा फिर उनकी तुलना आरम्भ करेगा। पहले वह ऐसे दस-पाँच भवनों या समाधियों को लेगा जो उसके अनुमान में आरम्भिक और समकालिक जान पड़ेंगी और उनकी वास्तु-सामग्री की तुलना करेगा तब सम्भवतः उसे ज्ञात होगा कि उनमें से कुछ में बहुत कुछ साम्य है यथा—एक से ही मिट्टी के बर्तन, एक ही तरह के औजार और हथियार उनमें मिलेंगे। इसी प्रकार वह दस-पाँच ऐसे भवनों अथवा समाधियों का अध्ययन करेगा जो उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समझ में परवर्ती काल की होंगी। उनमें भी उसे पहले वाली वस्तुओं से कुछ समानता जान पड़ेगी किन्तु साथ ही उसे यह भी ज्ञात होगा कि आरम्भकालिक बर्तन और हथियार परवर्ती भवन अथवा समाधि में कम प्राप्य हैं और परवर्ती रूप का आरम्भिक वस्तुओं में अभाव है। यदि वह इन तथ्यों को स्थिर कर लेता है तो उसे एक आधार प्राप्त हो जाता है। अब वह यह मान कर कि उसके वे दोनों समूह आरम्भ और अन्तकाल को व्यक्त करते हैं, वह अन्य भवनों अथवा समाधियों की वस्तुओं की परीक्षा करता है। जिसकी वस्तुएं उसे पहले समूह के सदृश जान पड़ेंगी वह उसे उसमें गिन लेगा। जिसमें आरम्भिक ढंग की वस्तुओं के साथ कुछ दूसरी वस्तुएं मिश्रित होंगी, जिनके सम्बन्ध में तब तक कुछ भी ज्ञात न होगा, वह अस्थायी रूप से काल के एक अगले कदम को व्यक्ति करती हुई अनुमानित की जायेंगी। जिनमें आरम्भकालिक वस्तुओं की संख्या अज्ञात काल की अपेक्षा कम होंगी वह काल के दूसरे कदम को व्यक्त करती हुई अनुमान की जायेंगी। इस प्रकार प्रत्येक समूह वस्तुओं के न्यूनाधिक्य के आधार पर काल को व्यक्त करता हुआ निर्धारित किया जायेगा जो सम्भवतः क्रमाधार पर अवलम्बित होगा और कालक्रम को व्यक्त करेगा। भवनों के वस्तुओं के वर्गीकरण में स्तरों का बहुत बड़ा आधार होता है। इस कारण उसका विभाजन अधिक सन्देहास्पद नहीं हो पाता। समाधियों के लिए स्तरों जैसी सुविधा नहीं होती है। यदि होती भी है तो उस पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता। अतः जब पुरातत्वविद् इस प्रकार क्रम से एक तिहाई समाधियों का वर्गीकरण कर लेता है तो वह शेष दो तिहाई को अनिश्चित कह कर छोड़ सकता है। इसके बाद वह अपने परिणाम की जाँच आरम्भ करता है। वह यह देखता है कि सबसे निचली समाधि के बाद वाली समाधियाँ भूमि में किस रूप में स्थित हैं। अन्य समाधियों की तुलना में उसका अनुमान कितना तथ्ययुक्त है। बर्तनों और औजारों—हथियारों के साथ-साथ मालाओं, सोने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के आभूषणों, मुहरों आदि का समन्वय किस प्रकार का है। यदि इन सब का समन्वय ठीक है, तब तो पुरातत्वविद् के अनुमान का आधार ठीक कहा जायेगा। और उसमें मिलने वाले बर्तन, हथियार आदि को, जो पूर्ववर्ती समाधि में न हों, उस काल की विशेषता मानी जा सकती है।

अब वह इन नवीन साधनों को आधार मान कर, उन समूहों के वर्गीकरण की परख करना आरंभ करेगा जो आरम्भिक और परवर्ती समाधि-समूहों में न लाये जा सके थे। इसी प्रकार वह धीरे-धीरे सारी समाधियों को कालक्रम के अनुसार समूहों में विभक्त कर लेगा जो विकास-क्रम के द्योतक होंगे। और उसका यह निष्कर्ष उसी प्रकार का होगा जिस प्रकार के निष्कर्ष पर भवनों के कालक्रम के सम्बन्ध में भवन के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त होने वाली सामग्री से पहुँचा जाता है। इस प्रकार सामग्री के आधार पर भवनों और समाधियों के काल-क्रम के निर्धारित करने की पद्धति में बहुत थोड़ा ही अन्तर है।

अब इस प्रकार प्राप्त काल-क्रम को पुरातत्वविद् अन्य साधनों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर वर्षों में विभाजित कर लेता है। वर्षों में काल विभाजन के अभाव में भी उस व्यवस्था के परिणाम का उपयोग फैशन परिवर्तन, और उसके आधार पर रहन-सहन और संस्कृति जानने में तो कर ही सकता है।

भवनों के स्तरों और समाधियों के समूहों में प्राप्त वस्तुओं की पारस्परिक तुलना कर उनका एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है और इस प्रकार पुरातत्वविद् प्रत्येक स्तर के काल के रहन-सहन, जीवन-मरण, धर्म-कर्म और रीति-रिवाजों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

* * *

सामान्यतः पाठकों की दृष्टि से पुरातत्व साहित्य शुष्क और अनावश्यक विवरणों से भरा हुआ जान पड़ता है। बात ऐसी है भी। पुरातत्वविद् जो कुछ भी लिखता है वह सर्वसाधारण के पढ़ने की वस्तु नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती । पुरातत्वविद् अपने विषय को अनन्त और अथाह मान कर अपने निष्कर्ष और उसके आधारभूत प्रमाणों को विद्वानों के सम्मुख उपस्थित कर उनका विश्लेषण करने के लिए आमन्त्रित करता है । ऐसी अवस्था में उसका अपाच्य होना स्वाभाविक है । उसकी वातें जो इतिहास के आधारभूत प्रमाण होते हैं अध्ययन और विश्लेषण के पश्चात् ही सार रूप में व्यक्त हो पाते हैं ।

मान लीजिये किसी स्थान से एक नर-कंकाल प्राप्त हुआ । उसका अध्ययन किसी मानुषवैज्ञानिक (एन्थ्रापालोजिस्ट) का ही काम होगा । वही उसकी शारीरिक विशेषताओं के आधार पर उस कंकाल के जातीय सम्बन्ध का निर्णय करेगा । वहुत सम्भव है उससे एक नयी जाति का ज्ञान हो और उसके आधार पर अनुमानित काल का, हथियारों और वस्तुओं के आधार पर अनुमानित काल का मेल खा सके । उस कंकाल के रोग, जोड़ों की असाधारण अवस्था, दाँतों के विकार आदि के परीक्षण से जीवन की अवस्था का ज्ञान होगा । इसी प्रकार टूटी हड्डियों के जोड़, चीड़फाड़ से तत्कालीन शल्यचिकित्सा पद्धति का ज्ञान होगा ।

यदि वर्तनों पर अंकित आकार और चित्रकला पर दृष्टि डालिये तो वहाँ के निवासियों के शरीर और कपड़े का अनुमान किया जा सकता है । इसी प्रकार कपड़े के अवशेष वुनाई की कुशलता व्यक्त करते हैं । समाधियों में कंधे के निकट गिरा पिन इस बात की ओर संकेत करता होगा कि ऊपर पहनने वाले कपड़े सिले नहीं जाते थे और बिना सिला शाल एक कन्धे पर डाल कर दूसरे कन्धे पर पिन से खोंस लिया जाता था । यह बताने की जरूरत नहीं कि हार, कंकण, टोपी आदि अपने मूल रूप में तत्कालीन पहनावे को बताते हैं ।

२६०० ई० पू० सरगोनी काल के शासकों की जो समाधियाँ उर में प्राप्त हुई हैं, उनसे ज्ञात होता है कि राजमहलों में स्त्रियाँ अपने सिरों में सोने की सादी पत्तियाँ बाँधती थीं । यदि ये पत्तियाँ समाधियों से बाहर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाजार में मिलतीं तो उनकी उपयोगिता तनिक भी ज्ञात न हो पाती। किन्तु अपने उचित स्थान पर मिलने के कारण हमें उसके बाँधने का मूल ढंग भी मालूम हो सका।

इसी प्रकार आरम्भिक सुमेर चित्रों में साधारणतया आदमियों का सर घुटा हुआ मिलता है जिससे जान पड़ता है कि वे लोग बाल नहीं रखते थे। कुछ काल के बाद के चित्रों में लोगों के लम्बे-लम्बे बाल दिखाई पड़ते हैं, जिससे अनुमान होता है कि ये दूसरी जाति के लोग होंगे। दूसरी ओर वहाँ के शासकों की समाधियों में साधारण व्यक्तियों के सरों पर सोने अथवा चाँदी के दुहरे चैन के साथ धागे में बंधे सोने और लाजवर्द के दानों की माला पड़ी पायी गयी है। उन्हें अरबों द्वारा सर पर बाँधे जाने वाले अगेल का रूप कह सकते हैं। उन्हें देख कर अनुमान होता है कि प्राचीन सुमेर निवासी घुटे हुए सर पर कपड़ा डालते रहे होंगे। वहाँ की एक समाधि में सर की इस माला के अतिरिक्त कफन के एक कोने में हलके भूरे रंग की धूल सी थी जिसमें बाल का अस्तित्व था। उसके ऊपर सर की सोने की माला पड़ी हुई थी। उसे देख कर अनुमान किया जाता है कि किसी विशेष अवसर पर सुमेर लोग किसी तरह का 'विग' पहनते रहे होंगे।

प्राप्त-सामग्री को देखकर तत्कालीन लोगों की रुचि, विचार तथा उनके कला-कौशल का भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार भूगर्भवेत्ता उन वस्तुओं का अध्ययन कर यह बता सकता है कि उन वस्तुओं में प्रयुक्त सामग्री कहाँ से प्राप्त होती थी। कभी-कभी वे वस्तुएं विदेश से आयी ज्ञात होती हैं तो उसके आधार पर विदेशों से सम्बन्ध, व्यापार आदि का मार्ग ज्ञात होता है। क्रीमिया, शाम और हंगरी की समाधियों के देखने से पता चलता है कि बाल्टिक के अम्बर के व्यापारियों ने अपना व्यापार सुदूर दक्षिण तक फैला रखा था। उर के शासकों की समाधियों से जो हथियार प्राप्त हुए हैं, वे काँस्य के हैं और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनमें कुछ प्रतिशत निकेल मिली हुई है। उसी मात्रा में निकेल मिली हुई काँस्य की खान का अस्तित्व फारस के ओमन नामक स्थान में प्राप्य है। अस्तु, निसंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि ३५०० वर्ष ई० पू० सुमेरवासी अपने कारखानों के लिए धातु ओमन के खान से ले जाते थे। इसी प्रकार अमाजोनाइट के बने मनके मेसोपोटामिया में बाढ़ से छोड़े हुए बालू के स्तर के नीचे मिले हैं। अमाजोनाइट एक प्रकार का हरे रंग का रत्न है जो भारतवर्ष के नीलगिरि पर्वत अथवा बैकाल झील के पर्वतों में प्राप्य है। उन्हें देख कर जलप्लावन काल से पूर्व के निवासियों के साहस पर आश्चर्य होने लगता है। वे हजारों मील के पर्वत और मरुस्थल को पार कर मेसोपोटामिया से भारत व्यापार करने आते थे।

मकान के ढेरों अथवा फर्श पर बिखरी हड्डियों को देख कर जन्तु-शास्त्री यह बता सकता ह कि लोग किस जाति के जानवर पालते थे अथवा किस प्रकार के जानवरों का लोग शिकार करते थे और खाते थे। बर्तनों में रखी सूखी वस्तुओं के आधार पर यह बताया जा सकता है कि वे लोग किस प्रकार के फल और अन्न उपजाते और खाते थे। इसी तरह विशेष प्रकार के बाण, मछली मारने के काँटे, जाल, हल, हंसिया, चक्की आदि से किसानों और शिकारियों के रहन-सहन पर प्रकाश पड़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमें लिखित सामग्री से सामाजिक संघ-टन, राजवंश, काल-क्रम आदि का पता लगता है। अभिलेख के अभाव में विभिन्न स्तरों की तुलना से नागरिक जीवन के परिवर्तन, विकास और ह्रास का ज्ञान होता है, और प्राप्त सामग्रियों के विभिन्न अंगों से जीवन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार पुरातत्वविद् अपनी कलाकुशलता से हमारे सामने अतीत का सजीव चित्र उपस्थित कर देता है। यह बात अवश्य है कि एक ही स्थान की खुदाई से पूर्ण और क्रमबद्ध सामग्री प्राप्त होने की कम सम्भावना रहती है किन्तु अनेक स्थानों की खुदाई के पश्चात् पुरातत्वविद् और उसके सहयोगियों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिश्रम के फलस्वरूप विस्तृत और वास्तविक इतिहास का निर्माण हो जाता है।

आज हम सभ्यता और युगों की विस्तृत और परिस्थिति पूर्ण कहानी पढ़ते हैं जो अभी कुछ काल तक अन्धकारमय कहा जाता रहा है। आज लिखित प्रमाण न होने पर भी हम उस कहानी की कल्पना को इसलिए अविश्वसनीय नहीं कह सकते कि वह केवल टूटे-फूटे वर्तनों की कहानी है। मृत सभ्यता को जीवित बनाने के लिए कल्पना की आवश्यकता होती है, यह हम मानते हैं, पर वह कल्पना अनर्गल नहीं होती। टूटे-फूटे वर्तनों का इतिहास-निर्माणक मूल्य वैज्ञानिक प्रयोग के ऊपर निर्भर करता है और उसी विज्ञान का उपयोग पुरातत्वविद् करता है। पुरातत्वविद् का प्रधान सिद्धान्त होता है—सत्य निरीक्षण और विस्तृत आलेखन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh